Website : www.akhilbharathindumahasabha.org
E-mail : editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org

प्रत्येक बुधवार को प्रकाशित

प्रति अंक मूल्य 4 रुपये

साप्ताहिक

हिन्दू सभा वार्ता

अखिल भारत
हिन्दू महासभा का मुखपत्र

वर्ष- 42 अंक-31
कल्पादि सम्वत् 1972949118

सम्पादक
मुन्ना कुमार शर्मा

दिनांक 17 अक्टूबर से 23 अक्टूबर 2018 तक
आश्विन शुक्ल अष्टमी से आश्विन शुक्ल चतुर्दशी 2075 तक

वार्षिक शुल्क 150 रुपये
पृष्ठ संख्या 12

दोस्ती के मायने.. पृष्ठ- 3

गर्मियों की लोकप्रिय.... पृष्ठ- 4

घातक है पर्यावरण... पृष्ठ- 5

अब रामद्रोही भी लोटने... पृष्ठ- 9

काम चलाऊ हिन्दू.. पृष्ठ- 12

शुभकामनाएं

समस्त देशवासियों व पाठकों को विजयदशमी की हार्दिक शुभकामनाएं

चन्द्र प्रकाश कौशिक — राष्ट्रीय अध्यक्ष
मुन्ना कुमार शर्मा — राष्ट्रीय महासचिव
वीरेश त्यागी — राष्ट्रीय कार्यालयमंत्री

रूस के साथ अहम समझौते का हिन्दू महासभा ने किया स्वागत

● संवाददाता ●

अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने भारत के दौरे पर आए रूस के राष्ट्रपति श्री ब्लादमीर पुतिन के वार्षिक द्विपक्षीय शिखर बैठक में हुए सैन्य समझौते का स्वागत किया है। इन समझौतों में एस–४०० मिसाइल सिस्टम की खरीद से जहां पड़ोसी पाकिस्तान की हालत शेष पृष्ठ 10 पर

पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव में हिन्दू महासभा बनेगा मजबूत राष्ट्रवादी विकल्प

● संवाददाता ●

चुनाव आयोग ने मध्यप्रदेश, राजस्थान, छत्तीसगढ़, मिजोरम और तेलंगाना में विधान सभा चुनावी रणभेरी बजा दी है। १२ नवम्बर से ११ दिसम्बर तक चलने वाले इस चुनावी महासमर में अखिल भारत हिन्दू महासभा भी अपने प्रत्याशी उतारेगा। महासभा उक्त पांच राज्यों में हिन्दुओं के राज स्थापित करने के उद्देश्य से व राष्ट्रवाद का पर्याय बनने के लिए अपने उम्मीदवार मैदान में उतारेगा। विदित हो कि आजादी के बाद से शासन सत्ता में रहने वाली तमाम पार्टियों ने न सिर्फ हिन्दुओं बल्कि सभी नागरिकों का शोषण किया है। कांग्रेस ने जहां तुष्टिकरण की राजनीति कर वोट के कारण हिन्दुओं के साथ हमेशा पक्षपात किया है। वहीं भारतीय जनता पार्टी ने हिन्दुओं के साथ किया गया कोई भी वादा पूरा न करके महज छल किया है। इसके अलावा इन क्षेत्रों में अपनी किस्मत आजमाने वाले अन्य दल केवल आर्थिक लाभ लेने के लिए चुनाव में भाग ले रहे हैं। जबकि अखिल भारत हिन्दू महासभा देश में एक मजबूत राष्ट्रवादी संगठन बनकर भारत को हिन्दू राष्ट्र बनाने के लिए संघर्ष करता रहा है उक्त चुनावों में हिन्दू महासभा राष्ट्रवाद का एक मजबूत विकल्प बनने को तैयार है। विदित हो कि इस चुनाव को २०१६ में होने वाले लोकसभा चुनाव के सेमीफाईनल के रूप में देखा जा रहा है। चुनाव आयोग ने छत्तीसगढ़ में दो चरणों में चुनाव कराने की घोषणा की है। पहले चरण में १८ सीटों के लिए २० नवम्बर को मतदान होंगे। मध्य प्रदेश और मिजोरम में सभी सीटों के लिए २८ नवंम्बर को मतदान होंगे, जब कि राजस्थान और तेलांगाना में सात दिसंबर को शेष पृष्ठ 10 पर

राम काज करिबे को आतुर

एक बार भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न तीनों भाइयों ने माता सीता जी से मिलकर विचार किया कि हनुमान जी हमें राम जी की सेवा करने का मौका ही नहीं देते, पूरी सेवा अकेले ही किया करते हैं। अतः अब राम जी की सेवा का पूरा काम हम ही करेंगे, हनुमान जी के लिए कोई भी काम नहीं छोड़ेंगे। ऐसा विचार करके उन्होंने सेवा का पूरा काम आपस में बांट लिया। जब हनुमानजी सेवा के लिये सामने आये, तब उनको रोक दिया और कहा कि आज से प्रभु की सेवा बांट दी गयी है; आपके लिए कोई सेवा नहीं है। हनुमान जी ने देखा कि भगवान को जम्हाई (जँभाई) आने पर चुटकी बजाने की सेवा किसी ने भी नहीं ली है। अतः उन्होंने यही सेवा अपने हाथ में ले ली। यह सेवा किसी के ख्याल में ही नहीं अयी थी। हनुमान जी में प्रभु सेवा करने की लगन थी। जिसमें लगन होती है, उसको कोई न कोई सेवा मिल ही जाती है। अब हनुमान जी दिन भर राम जी के सामने ही बैठे रहे और उनके मुख की तरफ देखते रहे, क्योंकि राम जी को किस समय जम्हाई आ जाय, इसका क्या पता? जब रात हुई, तब भी हनुमान जी उसी तरह बैठे रहे। भरत आदि सभी भाइयों ने हनुमान जी से कहा कि रात में आप यहाँ नहीं बैठ सकते, अब आप चले जायँ। हनुमान जी बोले कि कैसे चला जाऊँ? रात को न जाने कब भगवन को जम्हाई आ जाय! जब बहुत आग्रह किया, तब हनुमान जी वहाँ से चले गये और छत पर जाकर बैठ गये। वहाँ बैठकर उन्होंने लगातार चुटकी बजाना शुरू कर दिया, क्योंकि राम जी को न जाने कब जम्हाई आ जाय! यहाँ राम जी को ऐसी जम्हाई आयी कि उनका मुख खुला ही रह गया, बन्द हुआ ही नहीं! यह देखकर सीता जी बड़ी व्याकुल हो गयीं कि न जाने राम जी को क्या हो गया है! भरतादि सभी भाई आ गये। वैद्यों को बुलाया गया तो वे भी कुछ नहीं कर सके। वसिष्ठ जी आये तो उनको आश्चर्य हुआ कि ऐसी चिन्ताजनक स्थिति में हनुमान जी दिखायी नहीं दे रहे हैं! और सब तो यहाँ हैं, पर हनुमान जी कहाँ हैं? खोज करने पर हनुमान जी छत पर बैठे चुटकी बजाते हुए मिले। उनको बुलाया गया और वे राम जी के पास आये तो चुटकी बजाना बन्द करते ही राम जी का मुख स्वाभिवक स्थिति में आ गया! अब सबकी समझ में आया कि यह लीला हनुमान जी के चुटकी बजाने के कारण ही थी! भगवान ने यह लीला इसलिये की थी कि जैसे भूखे को अन्न देना ही चाहिये, ऐसे ही सेवा के लिये आतुर हनुमान जी को सेवा का अवसर देना ही चाहिये, बन्द नहीं करना चाहिये। फिर भरतादि भाइयों ने ऐसा आग्रह नहीं रखा।

हिन्दू धर्म में कर्म का महत्व

***महाभारत** में कर्म के बारे में जो बताया गया है उसके पीछे भागों* की अनेक धारणाएं हैं। महाभारत में जब अर्जुन को पता चला है कि उसके परिवार के सदस्य ही उसके विपरीत और दुश्मन हैं तो वे एकध र्म संकट में पड़कर युद्ध से अपने आपको अलग करने की सोचते हैं। उस समय भगवान श्री कृष्ण अर्जुन को बताते हैं कि उन्हें अपना कर्म करना चाहिए। इसलिए हिन्दू धर्म में कर्म को काफी महत्व दिया गया है। कर्म क्रे बारें में ज्यादा जानना ही हिन्दुत्व है। वेदांत दर्शन की तरह अनेक विचारधाराएं हैं जो कर्म पर केन्द्रित हैं। वेदांत दर्शन में कर्म पर ज्यादा विश्वास किया गया है और इस बात पर जोर दिया गया है कि कर्म की मनुष्य जीवन को नियंत्रित करता है ना कि भाग्य। कर्म व्यक्ति के भाग्य को निर्धारित करता हैं। मनुष्य अपने कर्मों से अपने भाग्य को निर्धारित करता हैं। आप अपने जीवन में जो करते हैं वो पलटकर आपके पास आता है यानि जैसे आप कर्म करते हैं वैसे फल पाते हैं। यदि आप खुशियां दोंगे तो खुशियां पाओंगे। यदि आप गलत और बुरे कर्म करोगे तो कोई ना कोई आपको धोखा जरूर देगा। कर्म का सिद्धांत कारण और प्रभाव पर निर्भर करता है। यह कहा जाता है कि हर क्रिया की प्रतिक्रिया होती है। इंसान जिस प्रकार के कार्य करता है वे उसका वैसा ही भाग्य निर्धारित करते हैं। कर्म का यह सिद्धांत सिर्फ मनुष्य जीवन पर लागू होता है। ये कर्म ही हैं जो निर्धारित करते हैं कि मृत्यु के बाद उसे स्वर्ग मिलेगा या नरक। यदि आप अच्छे कर्म करेंगे तो आप मोक्ष की प्राप्ति शेष पृष्ठ 10 पर

साप्ताहिक राशिफल

तुला : इस सप्ताह आपको–अपने कार्यो में चुनौतियों के लिए तैयार रहना होगा। घर–गृहस्थी की समस्यायें आपको घेरे रहेंगी। जिससे आपका मानसिक सन्तुलन बिगड़ सकता है। किसी से मुकाबला न करके स्वयं को मजबूत करने का दृष्टिंकोण अपनायें।

वृष : इस सप्ताह आप शान्त बनें रहने के कारण आप सम्बन्धों एंव सम्पत्ति के मामलें में भाग्यशाली रहेंगे। कुछ गुप्त विरोधी आपके सामने समस्यायें खड़ी कर सकते है। माता का स्वास्थ्य खराब होने की आशंका है। प्रेम के मामलें में किया प्रयास सार्थक सिद्ध होगा।

मिथुन : व्यवसास में दूरदर्शिता बनायें रखने की आवश्यकता है। किसी भी योजना को बनायें परन्तु उसे गुप्त रखना अपरिहार्य है। कुछ नयें लोगों से जान–पहचान बढ़ेगी जिससे आगामी समय में ये लोग आपके काम आ सकते है।

कर्क : इस सप्ताह आपकी व्यवसायिक गतिविधियों में प्रगति होगी। रोजी व रोजगार के नयें अवसर प्राप्त होंगे। परिवार के सदस्यों के साथ थोड़ी तीखी झड़प होने के आसार है। छात्रों के लिए उचित समय है, अतः अवसरों का लाभ उठाने में कोई कोताही न बरतें।

सिंह : परिवार के सभी सदस्यों के साथ प्रेम पूर्वक भोजन ग्रहण करें, जिससे आपसी मतभेद दूर हो सकता है। वृद्ध व्यक्ति अपनी दिनचर्या अत्यधिक व्यस्त रखने का प्रयास करें तभी मन शान्त रहेगा। कुछ कार्यो के सफल होने से मानसिक उर्जा में वृद्धि होगी।

कन्या : इस सप्ताह आप जिसे बहुत चाहते है, उनके लिये सबकुछ करने को तैयार रहेंगे। परिवार में दुख दर्द से भरा माहौल रहने की आशंका है। धन से सम्बन्धित लम्बित मामलों में प्रगति होने के आसार है। आर्थिक मामलों में सावधानी अपेक्षित है अन्यथा समस्याओं से घिर सकते हैं।

तुला : सन्तान के व्यवहारिक पक्ष पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। परिवार का सुख व सहयोग मिलता रहेगा जिसके कारण आप हताश नहीं होंगे। जॉब वाली महिलायें समय का प्रबन्धन अवश्य करें अन्यथा बॉस से सहयोग की उम्मीद न करें।

वृश्चिक : इस सप्ताह मित्रों के साथ अत्यधिक समय न बितायें अन्यथा आपके वैवाहिक जीवन में तनाव उत्पन्न होने की आशंका है। ऑफिस में कई तरह के लोग होते है। सभी लोगों के साथ सामंजस्य बनायें रखें अन्यथा सहकर्मियों के साथ खटपट हो सकती है।

धनु : घर में स्वच्छ व सुन्दर माहौल बनायें रखने के लिए, अपने अहंकारी स्वभाव पर नियन्त्रण रखें। परिवार का सुख व सहयोग मिलता रहेगा जिसके कारण आप हताश नहीं होंगे। आप यदि गैर सरकारी संस्था बनाना चाहते है, तो किसी नजदीकी व्यक्ति को महत्वपूर्ण पद न दें।

मकर : आपका हर कदम महत्वपूर्ण है इसलिए जो भी करें सोंच–समझकर ही करें तो बेहतर रहेगा। नयें सम्बन्धों के प्रति मन में उदासीनता के भाव उत्पन्न हो सकते है। जो लोग किसी यात्रा पर जा रहें, उन्हे दूसरों के साथ मिलकर रहना ही लाभकारी रहेगा।

कुम्भ : कुछ नयें लोगों से जान–पहचान बढ़ेगी जिससे आगामी समय में ये लोग आपके काम आ सकते है। आप–अपनी सन्तान के विवाह को लेकर काफी चिन्तित रहेंगे।

मीन : जीवन स्वयं परमात्मा है, आपको जिन्दगी की धारा के साथ होने की जरूरत है। आप किसी भी चीज को जीतने का भाव छोड़े क्योंकि बिना होश के कुछ भी जीता हुआ हार के समान है। नवयुवकों को अत्यधिक परिश्रम करने पर ही धन की प्राप्ति होगी।

पं० दीनानाथ तिवारी

श्रीमद्भगवत गीता

असक्तबुद्धिः सर्वत्र जितात्मा विगतस्पृहः।
नैष्कर्म्यसिद्धिं परमां सन्न्यासेनाधिगच्छति।।

सर्वत्र आसक्तिरहित बुद्धिवाला, स्पृहारहित और जीते हुए अन्तःकरण वाला पुरुष सांख्य–योग के द्वारा उस परम नैष्कर्म्यसिद्धि को प्राप्त होता है।।४६।।

सिद्धिं प्राप्तो यथा ब्रह्म तथाप्नोति निबोध मे।
समासेनैव कौन्तेय निष्ठा ज्ञानस्य या परा।।

जो कि ज्ञानयोग की परानिष्ठा है, उस नैष्कर्म्य–सिद्धि को जिस प्रकार से प्राप्त होकर मनुष्य ब्रह्म को प्राप्त होता है, उस प्रकार को हे कुन्तीपुत्र! तू संक्षेप में ही मुझसे समझ।।५०।।

बुद्धया विशुद्धया युक्ता धृत्यात्मानं नियम्य च।
शब्दादीन्विषयांस्त्यक्त्वा रागद्वेषौ व्युदस्य च।।
विविक्तसेवी लघ्वाशी यतवाक्कायमानसः।।
ध्यानयोगपरो नित्यं वैराग्यं समुपाश्रितः।।
अहङ्कारं बलं दर्पं कामं क्रोधं परिग्रहम्।
विमुच्य निर्ममः शान्तो ब्रह्मभूयाय कल्पते।।

विशुद्ध बुद्धि से युक्त तथा हलका, सात्त्विक और नियमित भोजन करने वाला, शब्दादि विषयों का त्याग करके एकान्त और शुद्ध देश का सेवन करने वाला, सात्त्विक धारण शक्ति के द्वारा अन्तःकरण और इन्द्रियों का संयम करके मन, वाणी और शरीर को वश में कर लेने वाला, राग –द्वेष को सर्वथा नष्ट करके भलीभाँति दृढ़ वैराग्य का आश्रय लेने वाला तथा अहंकार, बल, घमण्ड, काम, क्रोध और परिग्रह का त्याग करके निरन्तर ध्यानयोग के परायण रहने वाला, ममतारहित और शान्तियुक्त पुरुष सच्चिदानन्दघन ब्रह्म में अभिन्नभाव से स्थित होने का पात्र होता है।।५१–५३।।

हिन्दू सभा
वार्ता
दिनांक 17 अक्टूबर से 23 अक्टूबर 2018 तक

अध्यक्षीय

कितना सच है ''जय किसान'' का नारा

लगभग छह दशक पहले देश के दूसरे प्रधानमंत्री स्वर्गीय लाल बहादुर शास्त्री ने 'जय जवान– जय किसान' का नारा देकर न सिर्फ उनके आत्मविश्वास का उत्साह वर्द्धन किया था वरन उनके आत्म सम्मान को भी एक ऐसी ऊर्जा प्रदान की थी, जिसके बल पर किसानों ने देश की अर्थव्यवस्था को अपने पैरों पर खड़ा करने का काम किया था। इसके बाद किसानों की स्थिति में निरंतर गिरावट आती गई। पिछले दो दशकों में करोड़ों लोगों का पेट भरने वाला किसान स्वयं भूखों मरने लगा और एक बड़ी संख्या में धरती पुत्रों ने कर्ज अथवा भूख की बेबसी के चलते स्व्यं को काल के शाल में डाल दिया। इस दौरान इन दो दशकों में कई सरकारें आईं और मजे की बात यह है कि इन सारी सरकारों ने अपने चुनावी वादों में किसानों को प्राथमिकता के आधार पर रखा। अपने भाषणों में किसानों को 'अन्न देवता', व देश का मसीहा बताने वाली यही सरकारें सत्ता में आते ही किसानों को सुविधाओं के नाम पर दो–चार झुनझुना पकड़ा कर अपने दायित्वों की इति श्री समझ लेते हैं। उक्त सरकारी झुनझुना भी किसानों के लिए कम इन सरकारी अथवा सरकारी समर्थन प्राप्त विचौलियों के लिए अधिक लाभदायी साबित होता है। अगर बात आन्दोलनों की करें तो आजादी के बाद से आज तक किसानों ने हजारों आन्दोलन किए हैं, लेकिन उनको अभी तक कितनी तवज्जों मिली है, यह किसी से छिपा नहीं है। सच पूछिये तो जिस देश में अन्नदाताओं को भी अपना अधिकार पाने के लिए चंद सत्ताधीशों के समक्ष आन्दोलन करना पड़े उस देश में विकास की परिभाषा बताने वालों को शर्म आनी चाहिए। विकास के रास्ते भूखे पेट से होकर कदापि नहीं गुजरते और पेट भरने वालों की मौत खाली पेट होने के कारण हो तो विकास का हर आंकड़ा बेमानी सा लगता है। सत्ता के झंडाबरहाटों द्वारा सत्ता बदलते ही कर्जमाफी का एक छोटा सा शिगूफा छोड़कर उन्हें ललचाया जाता है। जिसमें कुछ का तो कर्ज माफ होता है, बाकी किसान ठगा सा महसूस करते हैं। कर्जमाफी मूलतः देखा जाये तो किसी सरकार द्वारा किसानों पर किया गया उपकार नहीं बल्कि किसानों का अधिकार हैं। कारण स्पष्ट हैं कि किसानों द्वारा कर्ज लेने के पीछे कारण क्या होते हैं। अगर उन्हें अपनी फसलों का सही मूल्य सही समय पर मिल जाए तो कर्ज की आवश्यकता ही क्यों पड़ेगी। यर्थाथ है कि सरकार की ढुलमुल नीतियों, योजनाओं की कागजी बाजीगरी और भ्रष्ट सरकारी तंत्र ही किसानों के लिए कर्ज लेने का प्रमुख कारण है। इसलिए यह कहने में कोई अतिश्योक्ति नहीं है कि सरकार की खामियों के कारण कर्ज लेना किसानों की मजबूरी है। मतलब सरकार स्वयं पहले घाव देने का काम करतीं है, फिर उस पर मलहम लगाने का ढिंढोरा पीटती है। सबसे बड़ी समस्या तो उन किसानों की है जो भूमिहीन हैं और बड़े काश्तकारों के खेतों पर निर्भर हैं। उनके लिए अभी तक किसी सरकार ने कोई ठोस कदम नहीं उठाएँ हैं। भूमिहीन किसानों को तो ना ही कर्ज मिलता है और ना ही दैवीय आपदाओं के बाद मिलने वाले तथाकथित राहत का कोई पैसा। परिस्थितियों में दुर्व्यवस्था के चलते ऐसे किसानों का "मौत के खेल" से सीधा वास्ता हो जाता है। आजादी के बाद से लगभग सभी सरकारों में किसानों के नाम पर राजनीति करने वाले अधिकांश नेताओं की अपनी स्थिति तो दिन–ब–दिन बेहतर होती रही, लेकिन किसानों के हालात बदतर होते गए। ऐसा क्यूं हुआ, वर्तमान परिवेश में इसकी सीमक्षा करने की आवश्यकता है। आए दिन आन्दोलन करने के लिए किसान क्यों बाध्य हो रहा है, इस पर महा मंथन की जरूरत है। पिछले दिनों दिल्ली आन्दोलन में दूर–दराज से पैदल चल कर आ रहे किसानों के साथ जो हुआ, उसे किसी भी दृष्टिकोण से उचित नही ठहराया जा सकता। ऐसा पहली बार नहीं हुआ है, किसानों के साथ अत्याचार में अधिकांश दलों की सरकारों ने अपने हाथ गंदे किए है और सत्ताच्युत होने के बाद घड़ियाली आँसू बहाया है। देश भर में अलग–अलग स्थानों पर अपनी मांगों को लेकर किसान लगातार आंदोलन कर रहें हैं लेकिन आश्वासनों के बावजूद उनकी दुश्वारियां दूर नहीं हो रहीं है। मध्य प्रदेश में मंद सौर, मार्च २०१८ में महारालू के मुम्बई में विधानसभा का घेराव, तमिलनाडु के किसानों द्वारा दिल्ली में प्रदर्शन के बाद गत दिनों पश्चिमी उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा के किसानों का प्रदर्शन पूर्णतः नाजायज तो नहीं हो सकता। हो सकता है कि कुछेक प्रदर्शन राजनीति से प्रेरित हो, लेकिन उनकी मांगें तो किसानों के हक में होंगी। यदि बार–बार सत्ता पर बैठी सरकारें किसानों के धैर्य की परीक्षा लेती रहेंगी तो आने वाला समय इतिहास में "किसान क्रांति" का साक्षी बन सकता है।

राष्ट्रीय उद्बोधन
चन्द्र प्रकाश कौशिक
राष्ट्रीय अध्यक्ष

E-mail : chandraprakash.kaushik@akhilbharathindumahasabha.org

सम्पादकीय

दोस्ती के मायने

इसमें कोई दो राय नहीं कि विश्व स्तर पर भारत की साख बढ़ी है और देश के प्रधानमंत्री की कोशिशों को सिरे से नकारा तो नहीं जा सकता।यदि कुछ मामलों मसलन पाकिस्तान के साथ संबधों को हटा दिया जाये तो भारत ने विश्व के अधिकांश देशों के साथ अपनी दोस्ती को मजबूती प्रदान की है। दुनिया के दो सबसे ताकतवर देशों यानी रूस और अमेरिका खुलकर जहां पाकिस्तान का विरोध करते नजर आ रहे हैं, वहीं भारत के साथ मित्रता की प्रगाढ़ता को स्वीकार भी करते देखे और सुने गए। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अभी हाल ही में भारत को अपना सीधा सम्मान प्रेषित किया तो वहीं दूसरी तरफ भारत दौरे पर आए रूस के राष्ट्रपति ब्लादमीर पुतिन द्वारा रक्षा सौदों पर लिए गए महत्वपूर्ण फैसलों ने न सिर्फ चीन और पाकिस्तान की पेशानी पर बल ला दिया है बल्कि अमेरिका को भी हैरत में डाल दिया है। कहा जाता है कि एक साथ तीन मिसाइल उगलने वाला एस ४०० मिसाइल डिफैंस सिस्टम का सौदा भारत को सेना को अजेय बनाने में मदद करेगा। यह सिस्टम दुनिया के तमाम हथियारों पर भारी पड़ेगा। हालांकि रूस से हमारा दोस्ताना संबंध आज का नहीं है बल्कि बहुत पुराना है और रूस ने हमेशा भारत का साथ देता रहा है लेकिन परिस्थितियां इस समय थोड़ी अलग सी है। सबंधों के इस मामूली अंतर को समझना थोड़ा कठिन तो है, लेकिन मुश्किल नहीं। उदाहरण के लिए पहले रूस की नजर में भारत की अहमियत वही थी जो वर्तमान में चीन की नजर में पाकिस्तान की है। लेकिन आज रूस भारत को अपने बराबर नहीं मानता तो भारत को खुद से कमजोर भी नहीं आंकता है। कमोवेश यही स्थिति अमेरिका के साथ भी है। वैसे देखा जाये तो अमेरिका का ४० प्रतिशत डिजीटल और इलेक्ट्रॅानिक कारोबार भारतीयों के दम पर ही चल रहा है। ऐसे में अमेरिका का भारत के प्रति प्रेम दर्शाना स्वाभाविक भी है। लेकिन रूस और अमेरिका के साथ बराबर की दोस्ती दुनिया के तमाम देशों को खटक भी रही है। पिछले वर्षों में भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने फिलिपींस के साथ–साथ इजराइल के जो रिश्ते बनाए उसका प्रभाव तमाम दूसरे–देशों के अलावा अपने देश में भी कुछ लोगों पर पड़ा और किसी न किसी बहाने उनका दर्द सामने आ गया। लेकिन पाकिस्तान जैसे छोटे और कमजोर आर्थिक स्तर वाले पड़ोसी से हम क्यों उसकी भाषा में जवाब देने से पीछें रह जाते हैं, यह विचारणीय प्रश्न है। पिछले तीन दशकों से हम कश्मीर मुद्दा का सही हल नहीं निकाल पा रहें है। धारा ३७० पर वादे के बावजूद ठोस निर्णय नहीं ले पा रहे। पाकिस्तान में बैठा आंतकी सरगना हाफिज सईद वहां की सेना और सरकार की आदेश देकर भारत को निरंतर नुकसान पहुंचा रहा है और हम सिर्फ तमाशा देखने को मजबूर हैं। जगजाहिर है कि जहां हम विश्व स्तर पर मजबूत हो रहें हैं वहीं आन्तरिक स्तर पर रोजाना कमजोर होते जा रहे हैं। बंगाल में हिन्दुओं के साथ हो रही ज्यादती को वहां की सरकार वोट बैंक के कारण समर्थन कर रही है। केरल में एक वर्ग विशेष द्वारा हिन्दुओं की हत्याएं की जा रही हैं। प्राचीन काल सें चली आ रही हिन्दू संस्कृति के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है और सरकारें चुप हैं। घुसपैठ कर आंतक फैलाने वाले रोहिंग्यां मुसलमानों के पक्ष में आवाज उठाने वाले नेताओं व तथाकथित समाजसेवियों की संख्या बढ़ती जा रही है लेकिन हिन्दुओं के साथ खडे होने वाले भी पीछे हट रहें है। जिस देश में तुष्टिकरण को ध्यान में रखकर कानून बनाये जातें रहें हो उस देश में आपसी दोस्ती की कल्पना किस हद तक सार्थक होगी इसका अंदाजा सहज लगाया जा सकता है। विरासत में मिली संस्कृति, परम्पराओं और धार्मिक इतिहास के बगैर देश में आपसी मित्रा की परिकल्पना बेमानी है। यह देश हमेशा से हिन्दू नेतृत्व का उदाहरण रहा है। लेकिन वर्तमान परिवेश में इसके साथ हो रही छेड़छाड़ हिन्दुओं को उद्वेलित कर रहा है। आज वाह्य और आंतरिक स्तर पर प्रत्येक क्षेत्र में मित्रा को परखने के लिए हिन्दुत्व के मौलिक आधार को लाने की आवश्यकता है। तभी सही मायने में दोस्ती के वास्तविक मायनें का अंदाजा हो सकेगा।

राष्ट्रीय आह्वान
मुन्ना कुमार शर्मा
राष्ट्रीय महासचिव

E-mail : munna.sharma@akhilbharathindumahasabha.org

गर्मियों की लोकप्रिय सब्जी : टींडसी

✍ प्रेमपाल शर्मा

टींडसी गरमी के मौसम की बेहद लोकप्रिय सब्जी है। खरीफ की फसल के साथ यह जमीन पर फैलने वाली बेल पर लगती है। इसकी बेल खीरे की बेल के समान, पुष्प पीले, आकार में छोटे, फल हरा और गोल, कभी–कभी चपटा, छोटी आकृति का, कुछ फल बड़े भी, बीजों से परिपूर्ण, बीज सफेद, फल पर छिलका नाममात्र का, स्वाद में लौकी जैसा, स्वादिष्ट और पाचक। यह दक्षिण एशिया तथा उत्तर भारत में अधिक पैदा होती है। गरमी तथा बरसात में बहुतायत से मिलती है, मक्की की फसल में भी इसे बो दिया जाता है।

टींडसी में पानी लगभग ६४ प्रतिशत तथा कैलोरी कम मात्रा में ही होती है। चूँकि इसमें पानी की अधिकता है, अतः इसके सेवन से शरीर ठंडा तथा चुस्त रहता है। यह पेशाब की मात्रा बढ़ाती है, यह अश्मरी आदि किडनी के विकारों में मुफीद है। इसमें रेशे भी पर्याप्त मात्रा में होते हैं, इस कारण यह भोजन को पचाने वाली, एसिडिटी मिटाने वाली तथा कब्ज का नाश करने वाली है। टींडसी पर हुए ताजा शोधों से पता चलता है कि यह त्वचा तथा बालों के लिए भी मुफीद है। यह उच्च रक्तचाप, हृदय रोग तथा हृदयाघात में लाभदायक है। यह कैंसर को रोकने में भी सक्षम पाई गई है। टींडसी में वे सब पोषक तत्व तथा खनिज–रसायन पर्याप्त मात्रा में हैं, जो शरीर के पोषण के लिए आवश्यक होते हैं।

गुणधर्म : आयुर्वेदिक चिकित्सकों तथा निघंटुकारों की दृष्टि में टींडसी की सब्जी किंचित गुरु, वातजनक, शीतल, जठराग्नि बढ़ाने वाली, मलबंध को तोड़ने वाली, पाचक तथा कफ–पित्त नाशक है। इसके अलावा यह दस्तावर, ठंडी, वातकारक, रूक्ष मूत्रवर्द्धक तथा अश्मरी को मिटाने वाली है। हृदय के लिए हितकर, इम्यूनिटी बढ़ाने वाली तथा यौवन प्रदायक कहा गया है।

उपयोग : गर्मियों में जब सब्जियों की आवक कम हो जाती है, तब टींडसी रसोई की शान बढ़ाती है। सब्जी बनाने के लिए हमेशा कच्ची टींडसी लेनी चाहिए। जब बीज सख्त हो जाते हैं, तो इनकी सब्जी स्वादिष्ट नहीं बनती। हमेशा साफ–सुथरे, गोल, थोड़े कम हरे, बिन दाग–धब्बे वाली टींडसी ही चुनें। इसे छिलको सीहत पकाना चाहिए, छिलका छीलकर या खुरचकर अलग नहीं करना चाहिए। यह गरमी की पसंदीदा सब्जी तो है ही, इसके औषधीय उपयोग भी कम नहीं हैं।

औषधीय उपयोग : आयुर्वेदिक चिकित्सकों ने इसके अनेक चिकित्सकीय उपयोग बताए हैं–

स्वस्थ कांतिमय त्वचा : टींडसी की सब्जी त्वचा के लिए बड़ी उपयोगी है। इसके साथ–साथ कच्ची टींडसी को बेसन के साथ पीसकर बनाए पेस्ट का त्वचा पर लेप करें। घंटे भर बाद स्वच्छ पानी से धोएँ, इससे त्वचा स्वस्थ तथा कांतिमय बन जाती है।

सुंदर-चमकीले बाल : बेरौनक व रूक्ष बालों को यह स्वस्थ तथा चमकदार बनाती है, रूसी व असमय बाल सफेद नहीं होते हैं।

मूत्र-संस्थान की गड़बड़ी : चूँकि टींडसी मूत्रल होती है, अतः इसके सेवन से मूत्र में इंफेक्शन नहीं होता, पेशाब खुलकर आता है। यह कफ–पित्त, मूत्राश्मरी, मूत्र संस्थान की सब गड़बड़ियों में फायदेमंद है।

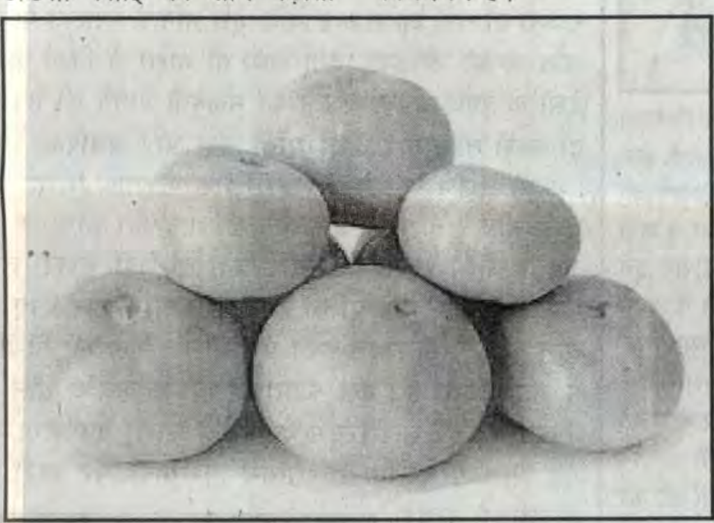

उच्च रक्तचाप : पानी की अधिकता के कारण टींडसी कोलेस्ट्रॉल को नियंत्रण में रखती है, जिससे उच्च रक्तचाप भी नियंत्रण में रहता है।

हृदय रोग : चूँकि टींडसी में कैलोरी कम और पानी की मात्रा अधिक है, इससे कोलेस्ट्रॉल नहीं बढ़ता और हृदय रोगों में लाभकारी है। इंसमें प्रदाहक निरोधी तत्व होते हैं, जिससे यह हृदयाघात, रक्तचाप तथा कैंसर में भी लाभदायक है।

पाचन संस्थान के रोग : टींडसी अत्यंत पाचक होने के कारण वृद्धों तथा मोटापे से पीड़ित लोगों के लिए फायदेमंद है। यह जठराग्नि को तीव्र बनाती है, एसिडिटी मिटाती है, पाचन को दुरुस्त रखती है तथा बदहजमी नहीं होने देती, पाचन–तंत्र को मजबूत बनाती है।

यौवन प्रक्षयक : टींडसी में पाया जाने वाला कैरोटिन बुढ़ापे को जल्दी नहीं आने देता। यह चेहरे के कील–मुंहासे, दाग–धब्बों को मिटाकर, सभी प्रकार के इन्फेक्शन से त्वचा की रक्षा करती है।

मस्तिष्क की कमजोरी : टींडसी में विटामिन बी ६ फैट्टी एसिड होता है। यह मस्तिष्क के सैल्स की बढ़ोत्तरी में सहायक है। अतः इसके सेवन से मस्तिष्क की कमजोरी दूर होती है।

वजन कम होना : शारीरिक दुर्बलता या वजन कम होने पर प्रातः नित्य कच्ची टींडसी का रस पीएँ। यह वजन के ह्रास को रोकती है।

रोग प्रतिरोधक शक्ति : टींडसी के बीज शरीर में प्रोटीन्स को व्यवस्थित रखते हैं और शरीर की रोग से लड़ने की शक्ति में वृद्धि करते हैं। टींडसी शरीर के संचार तंत्र तथा कार्यप्रणाली को दुरुस्त रखती है, अतः इसका सेवन भरपूर मात्रा में करना चाहिए।

आमवात : रोगी तथा जिनको जोड़ों के दर्द की शिकायतत रहती है, उनके लिए टींडसी का सेवन फायदेमंद है। सेवन के साथ–साथ कच्ची टींडसी को कुचलकर बनाए पेस्ट को जोड़ों तथा त्वचा पर, जहाँ नीले निशान या दाग–धब्बे हों, लेप कर दें। टींडसी इन सब विकारों को दूर कर त्वचा को सामान्य बनाती है। इसके लिए टींडसी के पत्ते भी उपयोग में लाए जा सकते हैं। इनका पेस्ट बनाकर जोड़ों पर लेप करने से दर्द में फायदा होता है। छोटी सी टींडसी जहाँ रसोई की शान बढ़ाती है, वहीं चिकित्सकीय गुणों से भी लबालब है। चूँकि यह गर्मी और बरसात में ही उपलब्ध होती है, अतः इन दिनों इसका भरपूर मात्रा में सेवन करें।

प्रकृति का उपहार : मुल्तानी मिट्टी

✍ अचलचन्द जैन

प्रकृति ने हमें कई अच्छी वस्तुएँ उपहार में दी हैं, जिनका उपयोग लाभदायी है। मुल्तानी मिट्टी इनमें से एक है। प्राचीनकाल में ऋषि–मुनि मुल्तानी मिट्टी का लेप बनाकर, पूरे शरीर पर लगाते थे क्योंकि यह लेप विभिन्न प्रकार के कीटाणुओं को शरीर की त्वचा के पास आने से रोकता है। मुल्तानी मिट्टी का नाम उसके जन्म स्थान के आधार पर रखा गया है। मुल्तानी मिट्टी मुल्तान नामक स्थान पर बहुतायत से मिलती है। इसके अलावा यह मिट्टी राजस्थान के जोधपुर संभाग के कुछ इलाकों में भी मिलती है। परतों में जमी हुई भूरे रंग की मुल्तानी मिट्टी का उपयोग युगों से सौन्दर्य प्रसाधन के लिए किया जाता रहा है, क्योंकि यह सबसे सस्ता और कारगर सौन्दर्य प्रसाधन है। मुल्तानी मिट्टी में आयरन, मैग्नीशियम, कैल्शियम आदि गुणकारी तत्व पाए जाते हैं। इतना ही नहीं, मुल्तानी मिट्टी में एन्टीसेप्टिक का गुण भी होता है, जो त्वचा सम्बन्धी समस्याओं से लड़ने में मदद करता है। इसके अलावा शरीर की अतिरिक्त गर्मी को सोखती है, जिससे फोड़े–फुन्सी समाप्त हो जाते हैं।

उपयोग : थोड़ी सी मुल्तानी मिट्टी, एक चम्मच खीरे का रस और एक चम्मच कच्चे आलू का रस, तीनों को मिलाकर उसके लेप को आँखों के नीचे लगाएँ। पन्द्रह दिन ऐसा करने से आँखों के नीचे का कालापन दूर हो जाएगा। मुल्तानी मिट्टी को शहद व ग्लिसरीन में मिलाकर कुछ दिन लेप करने से भी काला हिस्सा साफ हो जाएगा। त्वचा को सुन्दर एवं आकर्षक बनाने के लिए भी इसक प्रयोग किया जाता है। इससे त्वचा खुश्क नहीं होती। गर्मियों के मौसम में इसका प्रयोग काफी लाभकारी है। गर्मी में घमौरियाँ दूर करने के लिए इसके पाउडर में दही मिलाकर साबुन की टिकिया की तरह बना लें और सूखने के बाद साबुन के स्थान पर इस टिकिया से गर्मियों में प्रतिदिन स्नान करें ऐसा करने से घमौरियाँ मिट जाएँगी। बालों को सुन्दर एवं आकर्षक बनाने के लिए बालों को धोते समय दही या छाछ में मुल्तानी मिट्टी मिलाकर लगाएँ। इससे बालों में चमक आएगी और बाल लम्बे होंगे। इसके अलावा यदि बालों में रूसी हो गई हो, तो मुल्तानी मिट्टी के साथ थोड़ा नमक और तेल मिलाकर बालों की जड़ों में लगाएँ, रूसी समाप्त हो जाएगी। बालों की जड़ों में नींबू का रस लगाएँ। उसके पश्चात मुल्तानी मिट्टी से बाल धोएँ। बालों की जड़ें मजबूत होंगी एवं बाल नहीं टूटेंगे। बादाम के टुकड़ों को पीसकर मुल्तानी मिट्टी के पाउडर में मिलाएँ, फिर कुछ मात्रा में दूध डालकर मिला लें। उस पेस्ट को चेहरे पर लगाने से चेहरा कोमल और साफ रहेगा एवं चेहरे का रंग निखरेगा। पुदीने की कुछ पत्तियों को पीसकर, कुछ मात्रा में दही मिला लीजिए, फिर इसमें मुल्तानी मिट्टी मिलाकर चेहरे पर लगाने से चेहरे के दाग–धब्बे दूर हो जाते हैं। इस तरह मुल्तानी मिट्टी प्रकृति का सस्ता और सर्वसुलभ उपहार है। इसका कोई दुष्प्रभाव भी नहीं पड़ता। अतः जनसाधारण भी प्रकृति के इस अनमोल उपहार का उपयोग कर, सुन्दर और आकर्षक बने रह सकते हैं।

सुनाना गांव के ग्रामीणों ने एसडीएम से की शौचालय निर्माण में धांधली की शिकायत

कैसे हो ओडीएफ, पात्रों के घर शौचालय ही नहीं

टिप्पणी–मोदी सरकार द्वारा कराए जा रहे सभी कार्यों में घटिया सामग्री का प्रयोग किया जा रहा है क्योंकि रिश्वतखोरी, भ्रष्टाचार, कमीशन चरम सीमा पर है अतः जनता को वास्तविक लाभ नहीं मिल रहा है।

सावरकरवाद प्रचार सभा, बुलन्दशहर

घातक है पर्यावरण से खिलवाड

कृष्ण कुमार यादव

मानव सभ्यता के आरंभ से ही प्रकृति के आगोश में पला और पर्यावरण की सुरक्षा के प्रति सचेत रहा, पर जैसे–जैसे विकास के सोपानों को पार करता गया, प्रकृति का दोहन व पर्यावरण से खिलवाड़, रोजमर्रा की चीज हो गई। ऐसे में आज समग्र विश्व में पर्यावरण असंतुलन चर्चा व चिंता का विषय बना हुआ है। जलवायु परिवर्तन, भूस्खलन, भूकंप, बाढ़, सूखा इत्यादि आपदाओं के कारण तमाम देशों की अर्थव्यवस्था को काफी नुकसान हो रहा है। पेड़ों की अंधाधुंध कटाई एवं ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन के कारण सारी दुनिया आज पर्यावरण के बढ़ते खतरे से जूझ रही है। मनुष्य और पर्यावरण का संबंध काफी पुराना और गहरा है। प्रकृति और पर्यावरण बहुत कुछ देते हैं, पर बदले में कभी कुछ माँगते नहीं। इसके बावजूद हम रोज प्रकृति व पर्यावरण से खिलवाड़ किए जा रहे हैं और उनका ही शोषण करने लगते हैं। हमें हर किसी के बारे में सोचने की फुर्सत है, पर प्रकृति और पर्यावरण के बारे में नहीं। प्रकृति को हमने भोग की वस्तु समझ लिया है, पर यह नहीं भूलना चाहिए कि पर्यावरण के अस्तित्व पर जब खतरा आता है, तो उसका खामियाजा मानव को ही भुगतना पड़ता है।

पर्यावरण असंतुलन के प्रति चेतना जागृत करने एवं धरती पर पर्यावरण को समृद्ध बनाने, पर्यावरण संरक्षण और पर्यावरण से जुड़े मुद्दों को मानवीय रूप प्रदान करने हेतु संयुक्त राष्ट्र संघ के तत्वावधान में हर वर्ष ५ जून को "विश्व पर्यावरण दिवस" के रूप में मनाया जाता है। इसका प्रमुख उद्देश्य

विभिन्न देशों के बीच पर्यावरण संरक्षण के मुद्दे पर पारस्परिक सहयोग को बढ़ावा देना एवं पर्यावरण के प्रति राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक जागरूकता लाते हुए, सभी को इसके प्रति सचेत व शिक्षित करना एवं पर्यावरण–संरक्षण के प्रति प्रेरित करना है। इस दिवस की शुरूआत संयुक्त राष्ट्र संघ की आम सभा के द्वारा वर्ष १६७२ में स्टॉकहोम में मानव पर्यावरण पर आयोजित कांफ्रेंस में की गई है। विश्वभर में इस दिन सतत् विकास की प्रक्रिया में आम लोगों को शामिल करने के मद्देनजर विश्व पर्यावरण दिवस पर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जिनका मुख्य उद्देश्य विश्व समुदाय का ध्यान पर्यावरण और उससे जुड़ी राजनीति की ओर आकृष्ट करना होता है। १६७२ में ही संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम का भी आरम्भ किया गया। गौरतलब है कि यह पहला ऐसा मौका था, जब विश्व पर्यावरण और उससे जुड़ी राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक समस्याओं पर इतने बड़े मंच पर चर्चा हुई थी। विश्व पर्यावरण दिवस पर विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से इस बात पर खास जोर दिया जाता है कि पर्यावरण और उससे जुड़े मुद्दों के प्रति आम धारणा बदलने में सभी समुदाय महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम ;छम्प्द्ध द्वारा प्रतिवर्ष विभिन्न थीमों पर विश्व पर्यावरण दिवस का आयोजन किया जाता है।

बदलती जीवनशैली, उपभोग के तरीके एवं सीमित प्राकृतिक संसाधनों और परिस्थितिक तंत्र पर बढ़ने वाला दबाव–प्राकृतिक असंतुलन के सबसे बड़े कारण हैं। विकास की अंधी दौड़ में समाज परंपराओं से कटता जा रहा है। एक समय हम नदियों को माँ समझते थे किंतु आज भावनाएँ बदल गई हैं। खुद के लाभ के लिए मानव पर्यावरण का दोहन कर रहा है। यहाँ तक कि प्रदूषण से कई जीवों का अस्तित्व संकट में है। हम नित धरती माँ को अनावृत्त किए जा रहे हैं। जिन वृक्षों को उनका आभूषण माना जाता है, उनका खात्मा किए जा रहे हैं। वृक्ष न सिर्फ पर्यावरण को शुद्ध करते हैं, बल्कि जीवन के लिए उपयोगी प्राणवायु उपलब्ध कराते हैं। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं कि पेड़–पौधों और वनस्पतियों के कारण ही हम जीवित हैं। वृक्ष, शिव का काम भी करते हैं, वे वायुमंडल की घातक जहरीली गैसों को स्वयं पी जाते हैं और हमें जीवन–वायु प्रदान करते हैं। सभी जानते हैं कि जिन देशों ने प्रकृति और पर्यावरण का अत्यधिक दुरुपयोग व दोहन किया, उन्हें आपदाओं के रूप में प्रकृति का कोपभाजन भी बनना पड़ा। फिर भी विकास की इस अंधी दौड़ के पीछे धरती के संसाधनों का जमकर दोहन किए जा रहे हैं।

आबादी बढ़ने से प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव बढ़ा है और प्राकृतिक संसाधनों के स्रोत सीमित होने के कारण भविष्य को लेकर चिंताएँ बढ़ी हैं। इसके बावजूद हमने अंधाधुंध विकास की जगह वैकल्पिक साधनों को नहीं अपनाया है। टिकाऊ विकास की चुनौती आज भी हमारे सामने बनी हुई है। वैश्वीकरण की नई उदारवादी नीति ने हमारे सामने बहुत–सी चुनौतियाँ खड़ी कर दी हैं, जिससे आर्थिक विकास के मॉडल लड़खड़ाने लगे हैं। खाद्य असुरक्षा ने, न केवल गरीब देशों, बल्कि संपन्न देशों को भी परेशानी में डाल दिया है। जैव–विविधता से जुड़े संकटों ने भी आर्थिक विकास पर असर दिखाया है।

विकास व प्रगति के नाम पर जिस तरह से पर्यावरण को हानि पहुँचाई जा रही है, वह बेहद शर्मनाक है। हम जिस धरती की छाती पर बैठकर प्रगति व विकास की बातें करते हैं, उसी छाती को रोज घायल शेष पृष्ठ 11 पर

स्वयं के अन्दर के रावण को पहचानें

रश्मि अग्रवाल

दशहरा यानि विजय दशमी जिसे बुराई पर अच्छाई की जीत के उत्सव के रूप में मनाया जाता है पर क्या हम इस कागज व रंगों से निर्मित रावण का वध करके स्वयं की बुराईयों को पहचान कर मार सकते हैं? इसलिए आइये कुछ ऐसी बातों को पहचान कर स्वयं पर विजय पायें।

स्वयं के अहं पर नियंत्रण : जैसा कि सभी जानते हैं कि रावण अत्यन्त विद्वान व दशों दिशाओं का ज्ञाता होते हुए भी अपने अह के कारण मारा गया क्योंकि व्यक्ति में जितना अहं होगा उतनी ही प्रतिशोध की भावना भी प्रबल होगी इसलिए अहंकार जीवन में सफलता के मार्ग में बाधक बनने वालो तत्वों में से एक है। अहंकार के भाव आते ही व्यक्ति अपनी शक्ति का आंकलन नहीं लगा पाता, बस मंजिल पर पहुंचने से पूर्व ही लड़खड़ा जाता है इसलिए अहंकार को पीछे छोड़ आगे बढ़ें।

क्रोध न हो : आज के आपाधापी भरे जीवन में प्रत्येक व्यक्ति स्वयं का क्रोध किसी न किसी रूप में प्रगट कर ही देता है चाहे वो सामने वाले व्यक्ति पर हो या स्वयं पर ही क्योंकि हमारे मन की गति अत्यन्त चलायमान होती है और ये चंचलता ही क्रोध को जन्म देती है इसलिए जीवन में उन्नति करने के लिए क्रोध को स्वयं से दूर रखें।

क्षमा करने की आदत : क्षमा मांगने से कठिन है क्षमा करना। प्रत्येक व्यक्ति क्षमा करने में सर्वथा कंजूसी करता है क्योंकि वो समझता है कि गलती करने वाले को अगर क्षमा कर दिया तो वो पुनः इसे दोहरायेगा इसलिए क्षमा किया ही ना जाए बस इंसान की ये ही सोच उसे बौना बना देती है, इसलिए क्षमा का मधुरस चख कर क्रोध का त्याग करें।

गलती स्वीकारें : समय की गति बहुत प्रबल है जैसे, 'गया हुआ समय व कही हुई बात वापस नहीं आती इसलिए स्वयं की गलतियों को पहचान कर उन्हें स्वीकार करें न कि दूसरों को दोषी ठहराएं और न ही गलती का उत्तर गलती से दें क्योंकि गलती तुच्छहीन, अंधी व अप्रिय होती है इसलिए अपने विरोधी से भी शांति व पवित्र भावना से मिले।

सकारात्मक विचार अपनायें : दुनिया में कोई भी व्यक्ति शतः प्रतिशत सुखी व खुश नहीं है इसलिए अपने जीवन के प्रत्येक क्षण को उल्लास से जिएं व विचारों को सकारात्मक बना कर एक अच्छी व दृढ़ सोच का परिचय दें ताकि स्वयं व आपके आस पास के व्यक्तियों को प्रसन्नता मिले व ऊर्जा भी मिले, क्योंकि खुशी खरीदी नहीं जाती वो स्वयं में ही होती है बस आवश्यकता है उसे दृढ़ कर बाहर लाने की अच्छी सोच व कल्पना ही व्यक्ति को सफलता की ओर ले जाती है इसलिए अपनी सोच को दूसरों का गुलाम न बनने दें।

आलोचना से रहें दूर : देखा जाए तो ये सच है कि दूसरों की आलोचना करने या सुनने में जो सुख व सुकून मिलता है वो शब्दों में बया नहीं शेष पृष्ठ 11 पर

भारतीय इतिहास के मिथ्याकरणपूर्वक भारत की छवि को धूमिल करने में रोमिला थापर का अक्षम्य अवदान

हरिकृष्ण निगम

यदि आज के भारतीय इतिहासकारों में हमारे प्राचीन इतिहास को धूल–धूसरित करने व पश्चिम में इसकी छवि पर सर्वाधिक चोट पहुंचाने वाले कुख्यात बुद्धिजीवियों पर एक नजर डाली जाये, तो शायद रोमिला थापर का नाम सबसे आगे रखा जायेगा। उनके कैरियर के ग्राफ को ऊंचा उठाने में उनके धुर हिन्दू विरोधी रूझान ने खुल जा सिम सिम जैसे जादुई मन्त्र का काम किया है।

सन् १९६० में उन्होंने लन्दन विश्वविद्यालय से पीएचडी की उपाधि ली और उनकी पहली कृति हिस्ट्री ऑफ इण्डिया का प्रथम भाग १९६६ में प्रकाशित हुआ था। इसी हिस्ट्री ऑफ इण्डिया का दूसरा भाग डा. पर्सीवल स्पियर ने लिखा था जो भारत के मुगल व ब्रिटिश काल पर था। स्वयं रोमिला थापर ने हिस्ट्री ऑफ इण्डिया के भाग–एक के प्राक्कथन में कहा था कि यह ग्रन्थ विशेषज्ञों के लिए नहीं सामान्य पाठकों के लिए है। अपनी सामान्य धारणाओं के बारे में वे सीधे कहती है कि प्राचीन ारत के लोगों को इतिहास–बोध नहीं था, हिन्दू कालक्रम के बारे में सदैव लापरवाह थे और किम्वदन्तियों तथा आख्यानों को ऐतिहासिक जामा पहनाने में प्रारम्भ से ही पारंगत थे। आठवीं शताब्दी के पहले का अर्थात् इस्लाम के आगमन के पहले का इस देश का इतिहास जिसे 'हिन्दू युग' कहा जाता है, वह सारा कालखण्ड महत्वहीन था।

हममें से अधिकांश लोगों को यह जानकर आज भी विस्मय होता है कि नोबेल पुरस्कार विजेता सर विद्याध्र एस. नयपाल ने 'लन्दन टाइम्स' में फारूख ढोंढी नामक पत्रकार को कुछ वर्ष पहले दिये एक साक्षात्कार में उनकी इतिहास लेखन की राजनीतिक दृष्टि को खतरनाक ही नहीं, एक फ्रॉड तक कह डाला था। इसी तरह डा. कर्ण सिंह ने, जो एक समय इन्दिरा गांधि के मंत्रिमण्डल में मंत्री थे, एक बार अपने मित्र रोमेश थापर, जो रोमिला थापर के बड़े भाई थे, से शिकायत की थी कि रोमिला थापर अपने विकृत व दुराग्रही इतिहास लेखन से भारत को नष्ट कर रही है। वे नहीं चाहते थे कि रोमिला थापर साम्यवादियों के हाथों एक मोहरा बनकर हिन्दू आस्था को नष्ट करने का अपना मिशन बनाये।

जब रोमिला थापर का सन् २००४ में सोमनाथ मंदिर के ध्वंस पर 'सोमनाथ मैनी वायसेज ऑफ हिस्ट्री' नामक ग्रन्थ प्रकाशित हुआ, तब साम्यवादी बुद्धिजीवियों के साथ–साथ कुछ भारत विरोधी अमेरिकी लाबियों ने भी उन्हें सिर आंखों पर बिठा लिया, क्योंकि इसमें हिन्दू विरोध की उच्छृंखलता चरम सीमा पर पहुंच गयी थी।

उीस समय सन् २००४ में अमेरिकी लाईब्रेरी ऑफ कांग्रेस ने उन्हें दक्षिण एशिया के विविध देशों की संस्कृति से जुड़े क्लूग पीठ पर आसीन किया। उन्हें सन् २००५ में मानविकी या ह्यूमेनिटिज का काट्ज विजिटिंग प्रोफेसर नियुक्त किया गया और साथ ही उन्हें सिम्पसन संटर में २००४–२००५ के लिए मध्य ऐशियाई अध्ययन के लिए राकफेलर फेलों भी बनाया गया।

उस समय तक सबको विदित था कि वे एक साम्यवादी देमे के इतिहासकार के रूप में इतिहास को तोड़कर अपने राजनीतिक एजेण्डे के तहत एक ऐसी भावना से लिख रही है जैसे हिन्दुओं के विरूद्ध घृणा ही उनके जीवन की अकेली शर्त हो।

अमेरिका के हवाई प्रान्त में रहने वाले भारतीय इतिहास के अध्येता बैनन पार्कर रोमिला थापर के दुराग्रहों से परिचित थे और उनकी भारतीय अतीत के बारे में गलत सूचनाएं देने से पहले से ही परिचित थे। प्रतिष्ठित क्लूग चेयर पर उन्हें आसीन कराये जाने से ये क्षुब्ध थे। उन्होंने अमेरिकी कांग्रेस को एक पत्र लिखा कि रोमिला थापर कट्टर हिन्दू विरोधी और मार्क्सवादी विचारधारा से ग्रस्त है और भारत के बारे में भ्रम फैला चकी है। हिन्दू सभ्यता पर मार्क्सवादी हमले के लिए अमेरिकी कर दाताओं के पैसों की बरबादी क्यों हो? हिन्दू संस्कृति, विश्व की सबसे प्राचीन तथा महान् सभ्यता है, जिससे दुनिया बहुत कुछ सीख सकती है। हम इसकी बेइज्जती का समर्थन क्यों करें? भारत का एक मित्र होने के नाते मैं इसका विरोध करता हूं। इसके लिए पार्कर ने अमेरिकी कांग्रेस के नाम एक हस्ताक्षर अभियान भी शुरू किया था। इस धोखेधड़ी से पर्दा उठाये जाने पर भारत के साथ–साथ साम्यवादियों के सहयोगियों ने राउथ एशिया सिटिजेंस वेब नामक वेबसाईट पर उन्हें हिन्दूवादी एजेंट कहकर भर्त्सना की शुरूआत की। देश के साम्यवादियों ने अपनी लड़ाई सेकुलरवाद के नाम पर अमेरिकी मीडिया में उसी घृणा के साथ पहुंचा उदी। एक पत्रकार की यह टिप्पणी देखने योग्य थी– 'अमेरिकी साम्राज्यवाद की एक सर्वोच्च संस्था की सेवा करने के लिए मार्क्सवादी प्रोफेसर विनत खड़ी थी और बाकी मार्क्सवादी उनकी कुर्सी बचाने के लिए 'हिन्दू फासीवादियों पर बरस रहे थे।'

अपने विरूद्ध दुष्प्रचार चलानेवाले को इंगित कर ब्रैनन पार्कर ने कहा, 'क्या इसी तरह के आधारों पर संसार भर की मीडिया में हिन्दू विरोधी समाचार छपते रहे हैं? क्या हिन्दुत्व को बदनाम करने के लिए निहित स्वार्थों से प्रेरित लोग सक्रिय हैं, जो ईसाई धर्मान्तरण बढ़ाने के लिए अनुकूल वातावरण बढ़ाना चाहते है? ज्यादा धर्मान्तरण, ज्यादा पैसा? आखिर यह माजरा क्या है?

असहमति या आलोचना का प्रत्युत्तर देने की मार्क्सवादी शैली ही अलग है। उसमें अर्धसत्य और सफेद झूठ दोनों का अनूठा सम्मिलन होता है। सच तो यह है कि चाहे रोमिला थापर हों या इरफान हबीब अथवा हरबंस मुखिया या विपिनचन्द्र सभी मार्क्सवादी इतिहासकार• अपने इतिहास लेखन में भारत में वर्तमान राजनीतिक स्थिति में साम्प्रदायिक तत्वों व राष्ट्रवादियों के विरूद्ध अपना कर्तव्य निभा रहे हैं। यह वे स्वयं स्वीकार कर चुके हैं और महज राजनीतिक कारणों से सफेद झूठ फैलाने में गालियों पर उतर आते हैं। आस्टिन निवासी इवेत सेस्सेर ने ७ नवम्बर, २००० के टेक्सास विश्वविद्यालय में रोमिला थापर के खेमे के एक मार्क्सवादी इतिहासकार प्रो. के.एन. पणिक्कर का भारत में इतिहास का पुनर्लेखन विषय पर एक भाषण सुना, उन्होंने आश्चर्य से नोट किया कि इतिहास से अधिक वे अपने राजनीतिक उद्देश्य की चर्चा कर रहे थे। रोस्सेर के अनुसार पणिक्कर या तो अकादमिक लेखन के मान्य तौर–तरीकों से अनभिज्ञ थे या फिर इतिहास के नाम पर राजनीति कर रहे थे। दूर अमेरिका में बैठकर अपने ही देश के हिन्दुओं को अकारण बदनाम करने की बात श्रोताओं के गले नहीं उतरी, क्योंकि वे इतिहासकार की जगह राजनीतिक दुष्प्रचार का सामना कर रहे थे।

आज हम भूल रहे हैं कि अयोध्या के राजजन्मभूमि आन्दोलन के समय दो दशक पहले १९८६ में रोमिला थापर ने अपने झूठों का नया पिटारा खोला था। १९वीं शताब्दी के ब्रिटिश इतिहासकारों व स्वयं मुस्लिम वृत्तान्तों में जो कुछ भी लिखा गया था, रोमिला थापर ने उसे असत्य सिद्ध करने की जी–तोड़ कोशिश की। यहां तक कि नेहरू सरकार के समय १९५१ के सोमनाथ मंदिर के जीर्णोद्धार के निर्णय को भी उन्होंने अपनी क्षुद्र दृष्टि से नेहरू–डा. राजेन्द्र प्रसाद विवावद के रूप में प्रस्तत किया। नेहरू जी जैसे सोमनाथ के पुनर्निर्माण के विरूद्ध हों या वे कांग्रेस के इस निर्णय से अलग थे और यह प्रकरण मात्र डॉ. राजेन्द्रप्रसाद व जय सोमनाथ के चर्चित लेखक के.एम. मुंशी जैसे कट्टरवादी हिन्दू नेताओं की साजिश थी–यह कहानियॉं रोमिला थापर जैसे इतिहासकार को छिछलेस्तर का राजनीतिबाज बना देती है।

यदि रोमिला थापर पर १०२६ में महमूद गजनवी का भयावह हमला, जो हिन्दू अन्तर्मन को अगले ८०० वर्षो तक झकझारेता रहा था मुस्लिम, हिन्दू व ब्रिटिश इतिहासकारों द्वारा निजी स्वार्थों के लिए रची दन्तकथा थी। इसी तरह साक्ष्यों के बसवजूद भी वे दोहराती रही हैं कि अयोध्या में १५२८ में बाबर या उसके सिपहसालार ने हिन्दू मन्दिर को नष्ट कर वहां मस्जिद बनाने का आदेश नहं दिया था। यह उनकी विक्षिप्तता ही कहलायेगी। यदि महमूद ने सोमनाथ का ध्वंस किया क्योंकि वह मात्र लुटेरा था, ध र्मविरोधी नहीं, तब यह घटिया स्तर का असत्य ही कहा जा सकता है। उनके अनुसार हिन्दुओं का यह एक बड़ा अपराध था कि उनके नगर व मन्दिर समृद्ध थे और वे शान्तिप्रिय भी थे। अतः आक्रमण तो होना ही था। यह इतिहास की भ्रामक और कुत्सित प्रवृत्ति ही हो सकती है।

रोमिला थापर को तो इस बात से ही चिढ़ है कि १९वीं शताब्दी के जेम्स मिल जैसे अनेक प्रसिद्ध इतिहासकारों ने भारतीय इतिहस को हिन्दू युग अथवा मुगल काल जैसे कालखण्डों में विभाजित ही क्यों किया? वे सबके सब साम्प्रदायिकता को बढ़ावा देने वाले थे; क्योंक वे हिन्दुओं को बताना चाहते थे; क्योंकि वे हिन्दुओं को बताना चाहते थे कि उन्होंने ही देश को मुस्लिम शासन की यन्त्रणाओं से छुटकारा दिलवाया। इसी तरह तत्कालीन मुस्लिम इतिहसकारों व पर्यटकों के मंदिरों के ध्वंस के वृत्तांतों को भी वे अतिशयोक्तिपूर्ण कहकर झुठलाना चाहती है। जहां सुविधा होती है, वहां वे

शेष पृष्ठ 11 पर

केरल में बढ़ती हिंसा चिन्ताजनक

✍ विजय कुमार

प्राकृतिक सम्पदा से भरपूर, देश के पहले सम्पूर्ण साक्षर राज्य केरल को 'भगवान की धरती' कहा जाता है। ऐसी मान्यता है कि भगवान परशुराम ने अपने फरसे से जो भूभाग समुद्र में से बाहर निकाला था, वह केरल ही है; पर इन दिनों यह राज्य वामपंथी शासन की शह पर खुलेआम हो रही देशभक्तों की हत्याओं से दुःखी है। मुख्यतः इनके शिकार हो रहे हैं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् और भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता।

केरल में संघ का काम १९४२ में शुरू हुआ था। १९४० में संघ के संस्थापक डॉ. हेडगेवार के निधन के बाद सैकड़ों युवक संघ कार्य के विस्तार के लिए निकले। उनमें से दादाराव परमार्थ और दत्तोपन्त ठेंगड़ी केरल आये। जैसे–जैसे काम बढ़ा, राष्ट्रविरोधियों के पेट में दर्द होने लगा। केरल में मुस्लिम, ईसाई और वामपन्थी तीनों संघ का विरोध करते हैं। ६२९ ई. में अरब के बाहर पहली मस्जिद के लिए जमीन केरल में चेरामन पेरुमल राजा ने ही दी थी। ईसाइयों का काम भी यहाँ बहुत पुराना है। इन दोनों ने वहाँ धर्मान्तरण से कोहराम मचा रखा है।

इस धर्मान्तरण में हिन्दू समाज की एक कुरीति की भी बड़ी भूमिका रही है। काफी समय तक हिन्दुओं को समुद्र यात्रा मना थी। शायद किसी बड़ी दुर्घटना के कारण यह नियम बना होगा। क्रमशः नौका विज्ञान उन्नत हुआ और नौसेनाएँ बनीं; पर यह नियम नहीं बदला। लेकिन मुसलमान समुद्र यात्रा पर जाते थे और दूसरे देशों से धन कमा कर लाते थे। वहाँ के लोग भी यहाँ आकर व्यापार करते थे।

यह देखकर हिन्दू भी जाग्रत हुए; पर धार्मिक मान्यता का क्या हो? कुछ लोगों ने इसका

रास्ता यह निकाला कि घर के एक युवक को मुसलमान बना दें। इससे धर्म का बन्धन नहीं रहेगा और धन आ जायेगा; पर इसका भारी विरोध हुआ और ऐसे युवकों के विवाह में बाधा आने लगी। अतः इन रास्ताप्रेमियों ने मामा की कन्या से विवाह (दक्षिणे मातुले कन्या) को स्वीकृति दे दी। कुछ ने बाहर से आये युवा मुस्लिम व्यापारियों को ही दामाद बना लिया। ये दामाद ही मापिल्ला (मोपला) कहलाये। क्रमशः ये धनवान होते गये और उनका अलग वर्ग बन गया।

कहावत है कि नया मुल्ला ज्यादा प्याज खाता है। ऐसे ही ये मोपला भी कट्टर होते गये। १९२०–२१ में खिलाफत के लिए हजारों मोपला तुर्की गये थे; पर वहाँ से लुट–पिटकर लौटने पर उन्होंने मालाबार क्षेत्र में भारी उपद्रव किया। हजारों हिन्दुओं को मारा और हजारों को मुसलमान बनाया। हिन्दू महिलाओं से बलात्कार हुआ; पर गान्धी जी ने आलोचना करने की बजाय उन्हें 'माई ब्रेव मोपला ब्रदर्स' कहा। वीर सावरकर का उपन्यास 'मोपला' इसी घटना पर केन्द्रित है।

केरल के मुसलमान आज भी बड़ी संख्या में खाड़ी देशों में काम–धंधे के लिए जाते हैं। इससे उनके घर तथा मस्जिदें सम्पन्न हुई हैं। मुसलमानों की भाषा, बोली और रहन–सहन पर भी अरबी प्रभाव दिखने लगा है। यह चिन्ताजनक ही नहीं, दुःखद भी है। देश विभाजन की अपराधी मुस्लिम लीग को देश में अब कोई नहीं पूछता, पर जनसंख्या और धनबल के कारण केरल में आज भी उनके विधायक और सांसद जीतते हैं।

केरल में ईसाई भी समुद्री मार्ग से ही आये। फिर उन्होंने अपनी चिर–परिचित शैली में चर्च, स्कूल और अस्पताल आदि खोले। इससे उनका धर्मान्तरण का धन्धा जोर–शोर से चलने लगा। इसमें दोष हिन्दुओं का भी है। केरल में जातिभेद बहुत गहराई तक फैला था। एक जाति का व्यक्ति दूसरी जाति वाले से कितनी दूरी पर चलेगा, इसके नियम बने हुए थे। कुछ लोगों को कमर में पीछे की ओर झाड़ू बाँधकर चलना पड़ता था, जिससे उनके चलने से गंदी हुई सड़क साफ होती चले। कुछ लोगों को थूकने के लिए गले में लोटा बाँधकर चलना होता था, जिससे सड़क अपवित्र न हो जाये। इसीलिए स्वामी विवेकानन्द ने केरल को 'जातियों का पागलखाना' कहा था। इसका लाभ उठाकर ईसाई मिशनरियों ने लाखों निर्धन और निर्बल लोगों को ईसाई बनाया। उनका यह षड्यंत्र आज भी जारी है।

भारत में कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना १९२५ में हुई। स्वयं को राष्ट्रीय के स्थान पर अन्तरराष्ट्रीय मानने वाले कम्युनिस्टों ने स्वाधीनता आन्दोलन में भारत की पीठ में छुरा भोंका और अंग्रेजों का साथ दिया; पर आजादी के बाद रूस और चीन की प्रेरणा और पैसे से ये दल बढ़ने लगे। नेहरू जी का झुकाव वामपन्थ और विशेषकर रूस की ओर था ही। १९६२ में चीन के आक्रमण के समय कम्युनिस्टों ने बंगाल में चीनी सेना के स्वागत वाले पोस्टर लगाये। उन्होंने चीन के नेता माओ को अपना भी नेता कहा। १९६२ के बाद नेहरू जी का चीन से तो मोहभंग हुआ, पर रूस से नहीं। इन्दिरा गान्धी भी रूस के प्रति उदार रहीं। कांग्रेस की टूट और १९७५ के आपातकाल में वामपन्थियों ने उनका साथ दिया। इससे उपकृत इन्दिरा जी ने महत्त्वपूर्ण शिक्षा और संचार संस्थान उन्हें सौंप दिये। इससे बुद्धिजीवी वर्ग में वे हावी हो गये। संसद के कानून से जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय बना, जिसका सारा खर्च केन्द्र उठाता है। इस प्रकार वामपन्थियों की नई पौध तैयार होने लगी।

पर हिन्दू और राष्ट्र विरोधी नीतियों के कारण वामपन्थी जनता से कटते गये और राजनीतिक रूप से पिछड़ने लगे। एक समय हिन्दीभाषी राज्यों स भी वामपन्थी जनप्रतिनिधि जीतते थे; पर फिर वे बंगाल, त्रिपुरा और केरल तक सिमट गये। अब बंगाली गढ़ टूटने से उनकी साँसें क्रमशः मन्द पड़ रही हैं। केरल में संघ और हिन्दू कार्यकर्ताओं पर हमले इसीलिए हो रहे हैं। मार्क्सवादियों का गढ़ 'कन्नूर' जिला इससे सर्वाधिक पीड़ित है।

इस हिंसा के अधिकांश शिकार वही तथाकथित निर्धन, निर्बल, दलित और पिछड़े लोग बने हैं, जो कभी कट्टर वामपन्थी थे; पर फिर उसके खोखलेपन को देखकर वे संघ से जुड़ गये। इससे बौखलाए वामपन्थी हिंसा पर उतर आये हैं। केरल में अब तक २५० से भी अधिक कार्यकर्ता मारे जा चुके हैं। मार्क्सवादी शासन में ये हत्याएँ बढ़ जाती हैं। गृह मंत्रालय उनके पास होने से थाने ही हत्यारों के ठिकाने बन जाते हैं। पिछले चुनाव में वामपन्थियों की जीत से भी यही हुआ है। हिंसा के उनके तरीके भी बर्बर हैं। स्कूल में पढ़ाते हुए अध्यापक की हत्या। वाहन में से खींचकर हत्या। हाथ–पैर बाँधकर जलाना। घर, दुकान, फसल या वाहन फूँकना। घर वालों के सामने मारना, हाथ–पैर काटना, आँखें निकालना आदि। वामपन्थी तथाकथित उच्च जाति और पैसे वालों को 'वर्ग शत्रु' कहकर शेष लोगों को उनके विरुद्ध 'वर्ग संघर्ष' के लिए भड़काते हैं; पर केरल में संघ ही उनका 'वर्ग शत्रु' है।

संघ के काम का आधार शुद्ध सात्विक प्रेम है। पूरे देश की तरह केरल में भी संघ बढ़ रहा है। शाखा और सेवा कार्यों से प्रभावित होकर सब तरह के लोग संघ में आ रहे हैं। अतः वामपन्थियों शेष पृष्ठ 11 पर

गिरता घर देखा है

तूफान उठा बह गयी नाव, जल निगल गया सम्पूर्ण गांव।
राहत शिविरों में सोच एक, जायें तो जायें कौन ठाँव।
बर्तन भाँडे बह गये सभी, खाने को कुछ भी नहीं अभी।
बिलबिला रहे भूखे बच्चे, रोने लगते है कभी कभी।
जिसने यह मंजर देखा है, हर ओर सिहर कर देखा है।
उसकी पीड़ा पूछो जिसने, अपना गिरता घर देखा है।
बादल फटने का शोर हुआ, वर्षा का फिर से जोर हुआ।
बिजली चमकी नभ के अंदर, गर्जन तर्जन घन घोर हुआ।
मन ही मन सहम गये बच्चे, घर दरक गये गाकी कच्चे।
राहत सहायता के सारे, कब होंगे आश्वासन सच्चे।
बह कर आया कल इक छप्पर, थी लाश पड़ी उसके ऊपर।
है कर्म किसी दुष्कर्मी का, जो भोग रहे हम धरती पर।
तस्वीर बह गयी लहरों में, तकदीर बह गयी लहरों में।
कुनबे का कुनबा बिखर गया लापता हुए कुछ लहरों में।
कुछ घर के भाई बहन बिछड़े, कुछ पैरों के बिछवे बिछड़े।
जल प्रलय मौत बन कर आई, सपने टूटे अपने बिछड़े।
हे राम रुके अब यह विनाश हो गया बहुत कुछ सर्वनाश।
अपनों की लाशें देख देख जीवित भी सब बन गये लाश।

हितेश कुमार शर्मा

अब रामद्रोही भी लौटने लगे हैं श्रीराम मंदिर की ओर!

✍ विनोद बंसल

अयोध्या में भगवान श्रीराम की जन्म भूमि पर भव्य मंदिर बने, इस बात को अब सभी कहने लगे हैं, चाहे कोई राजनेता हो या समाज शास्त्री, हिन्दू हो या मुसलमान, वह अलग बात है कि कुछ लोग यह डंके की चोट पर कहते हैं तो कुछ दबी जुबान में, कुछ को सिर्फ दिखावे के लिए बोलना पड़ता है, तो कुछ दिल से, किसी को इसमें उनका राजनैतिक हित सधता नजर आता है तो कोई सिर्फ यह देखने हेतु कह बैठता है कि देखें इसके लोग क्या अर्थ लगाते हैं, कोई सीधे राम मंदिर की बात न कर, मंदिर आन्दोलन से जुड़े पूज्य संतों की शरण में जाने का, तो कोई किसी अन्य मंदिर की बात कर हिन्दू समाज का हितैषी दिखने का नाटक करने लगता है।

अभी हाल ही में एक ऐसे राजनैतिक दल ने, कंबोडिया के विश्व प्रसिद्ध अंकोरवाट मन्दिर की तर्ज पर, उत्तर प्रदेश में एक भव्य विष्णु मंदिर बनाने का चुनावी शगूफा छेड़ दिया है, जिसे अयोध्या में असंख्य निहत्थे राम–भक्तों पर गोली चलवाकर दर्जनों की हत्या में भी गर्व का अनुभव होता है। इतना ही नहीं, चाहे सिर्फ टीवी चैनलों की बहसों में ही सही, अब तो वे लोग भी राम मंदिर का समर्थन करते हुए देखे जा रहे हैं, जो सर्वोच्च न्यायालय में भगवान श्री रामलला के विरोध में खड़े हैं। विचारणीय विषय यह है कि जो अब तक सैक्यूलरवाद का लबादा ओढे अयोध्या में श्रीराम जी के मंदिर के विरोध में बंदूक ताने खड़े थे, किसी मंदिर, संत या हिन्दू हित की बात करने को ही साम्प्रदायिक मानते थे, यदि कोई राजनेता भगवा वस्त्र धारण करता या माथे पर तिलक, चन्दन या टीका धारण करते हुए दिखता था तो स्पष्ट तौर पर वह सैक्यूलर नहीं माना जाता था। आज ये सब चाहे दिखावे को ही सही, क्यों बदले–बदले से नजर आ रहे हैं। ऐसी मानसिकता के लोग भी अब न सिर्फ बड़े–बड़े टीके व भगवा वस्त्र धारण करने लगे हैं बल्कि, अपने जनेऊ का भी प्रदर्शन कर मंदिरों में फोटो खिंचवाने व उसे अखबारों–टीवी चैनलों में चलवाने लगे हैं। हिन्दू धार्मिक यात्राओं के स्वागतार्थ बड़े–बड़े होर्डिंग अब सैक्यूलर नेता भी अपने फोटो के साथ लगाने लगे हैं। आखिर कहाँ गईं वे तस्वीरें जो हम अपने बचपन से अखबारों के मुख पृष्ठ में देखते आ रहे थे कि नेताजी चाहे हिन्दू हो मुसलमान, सबके सिर पर जालीदार गोल टोपी तथा कंधे पर हमरा गमछा है... . हालाँकि, इन वक्तव्यों या दिखावे की राजनीति से अयोध्या में जन्मस्थली पर भव्य मंदिर निर्माण आसान हो जाएगा, ऐसा नहीं है। हाँ इतना है कि राजनेता अब यह बात स्पष्ट तौर पर कहने लगे हैं कि मंदिर का रास्ता न्यायालय या संसद से ही निकलेगा और इसे वर्तमान सत्ताधारी राजनैतिक दल को ही निकालना चाहिए उसे संसद में प्रस्ताव लाकर मंदिर का मार्ग प्रशस्त करना चाहिए। किन्तु उन्हीं राजनेताओं से जब ऐसे संसदीय प्रस्ताव के समर्थन के बारे में पूछा जाता है तो वे दाएँ–बाएँ देखने लग जाते हैं। गत कुछ महीनों से तो राम मंदिर के मामले पर होने वाली टीवी की बहसों में प्रमुख विपक्षी दलों ने अपने प्रवक्ताओं को भी भेजने से किनारा कर लिया है, क्योंकि उनकी दुविधा यह है कि जो दशकों से, स्पष्ट तौर पर, राम मंदिर को साम्प्रदायिक मुद्दा कह कर, विरोध करते आए हैं, अब किस मुँह से उसका समर्थन करें। और, यदि उसका विरोध करते हैं तो, अपनी सुषुप्तावस्था से उठ खड़े हुए हिन्दू समाज को अब क्या मुँह दिखाएँगे? दूसरा, अब उनकी मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति का क्या होगा? गत ४९० वर्षों के अनथक संघर्षों में ३.५ लाख रामभक्तों के बलिदान तथा सत्तर से अधिक वर्षों की सतत कानूनी लड़ाई के बाद अब यह दिखने लगा है कि इस मामले का समाधान भी अब सन्निकट ही है। आगामी दो माह इस मामले में मील के पत्थर साबित हो सकते हैं। अभी तो सभी की निगाहें माननीय सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश पर टिकी है जो इसके त्वरित गति से समाधान करने के पक्ष में हैं। किन्तु, जैसा कि गत ६ महीनों से देखने को मिल रहा है, उच्चतम न्यायालय के कार्य में, कांग्रेस व अन्य सैक्यूलरिस्ट रामद्रोहियों की 'शाउटिंग ब्रिगेड', एक के बाद एक रोड़ा अटकाकर मामले को टालने में जी–जान से लगी है, दूसरे विकल्प पर भी विचार करना ही होगा। वैसे उसकी राह के कंकड़ भी सड़क किनारे लगने लगे हैं। अब वह दिन दूर नहीं कि या तो सर्वोच्च अदालत या फिर सभी सांसदों की सामूहिक शक्ति के द्वारा आपसी मतभेद व राजनैतिक स्वार्थ भुलाकर वर्तमान संसद, टाट के टेन्ट से श्री रामलला को एक भव्य मंदिर में पुनः प्रतिष्ठित कर रामराज्य का मार्ग प्रशस्त करेगी। वास्तव में यह मामला हिन्दू–मुसलमान के बीच का न होकर राष्ट्रीयता व राष्ट्रीय स्वाभिमान से जुड़ा है। बाबर जैसे विदेशी लुटेरे, पापी व अत्याचारी या उसके द्वारा बनाए बाबरी ढाँचे से क्या किसी भारतीय स्वाभिमानी समुदाय को जोड़ा जा सकता है? भारत का संविधान, जिसके प्रथम पृष्ठ पर भगवान श्रीराम का दरबार छपा हो, उसकी जन्मभूमि पर पहले से विद्यमान मंदिर की सिर्फ भव्यता का विरोध, क्या देश के संविधान व उसकी पुरातन संस्कृति का विरोध नहीं? गत कुछ वर्षों में अनेक रामद्रोहियों को उनके द्वारा किए गए रामविरोध की सजा भी स्वतः मिल चुकी है। क्या अब भी कोई उसका कोप–भाजन बनना चाहेगा? चाहे छुप–छुप कर ही सही, अपनी जली हुई लंका को छोड़ कर, रामद्रोही भी अब अयोध्या की ओर लौटते हुए नजर आ रहे हैं।

विज्ञान के रोचक तथ्य

१. 'Scientist' शब्द पहली बार १८८३ में प्रयोग किया गया था।

२. वैज्ञानिकों ने ये पता लगा लिया है कि मुर्गी पहले आई या अंडा? उनके अनुसार अंडे में एक ऐसा प्रोटीन पाया जाता है जो केवल मुर्गी उत्पन्न कर सकती है।

३. वैज्ञानिकों द्वारा प्रतिदिन ४१ नई प्रजातियाँ खोजी जा रही हैं।

४. आकाश से गिरी हुई बिजली सूर्य के ताप से ५ गुना ज्यादा गर्म होती है।

५. प्रकाश को आकाशगंगा के एक छोर से दूसरे छोर तक जाने के लिए १००,००० साल का समय लगता है।

६. आपको ये जानकर हैरानी होगी कि आप बर्फ के टुकड़े से आग शुरू कर सकते हैं।

७. Ploutonium मनुष्य द्वारा बनाया गया सबसे पहला तत्व है।

८. अगर आप अंतरिक्ष में जाते हैं तो आप गला घुटने की बजाए, शरीर के फटने से पहले मर जायेंगे क्योंकि वहाँ पर हवा का दबाब नहीं है।

६. ध्वनि हवा से ज्यादा स्टील में लगभग १५ गुना अधिक गति करेगी।

१०. जब एक जैट प्लेन की गति १००० किलोमीटर प्रतिघंटा होती है तब उसकी लम्बाई एक परमाणु घट जाती है।

११. जब चाँद बिलकुल आपके सिर पर होता है तो आपका वजन थोड़ा कम हो जाता है।

१२. तत्वों की आवर्ती सारणी में श्रश अक्षर कहीं भी नहीं आता।

१३. क्विक सिल्वर या पारा ऐसी एकमात्र धातु है, जो तरल अवस्था में रहती है और इतनी भारी होती है कि इस पर लोहा भी तैरता है।

१४. चंद्रमा हर साल हमसे ३.७८ सीमी दूर हो रहा है।

१५. नाभिकीय भट्टियों में प्रयुक्त गुरु–जल विश्व का सबसे महँगा पानी है। इसके एक लीटर का मूल्य लगभग १३,५०० रुपये होता है।

१६. नील आर्मस्ट्रॉंग ने सबसे पहले अपना बाँया पैर चँद्रमा पर रखा था और उस समय उनके दिल की धड़कन १५६ बार प्रति मिनट थी।

१७. एक मध्यम आकार के बादल का वजन ८० हाथियों के बराबर होता है।

१८. धरती एकलौता ऐसा ग्रह है जिसका नाम किसी देवता के ऊपर नहीं रखा गया और ना ही पुल्लिंग रखा गया है।

१९. एस्बेस्टस नामक पदार्थ आग में नहीं जलता।

२०. शुक्र ग्रह की सतह का तापमान ३५१ डिग्री से ८६४ डिग्री फॉ. है, जो किसी भी ग्रह की सतह का सबसे अधिक तापमान है।

२१. नार्वे दुनिया का एक ऐसा देश है जहाँ सूरज आधी रात में चमकता है।

२२. प्रकाश से धरती की यात्रा करने के लिए सिर्फ ०.१३ सेकेंड लगेंगे।

२३. अब तक का सबसे बड़ा ज्ञात Canis Majoris (केनिस मीजोरिस) है। यह इतना बड़ा है कि इसमें ७ ००० ००० ००० ००० ००० पृथ्वियाँ समा सकती हैं। दूसरे शब्दों में अगर पृथ्वी का आकार एक मटर के दाने जितना कर दिया जाए तो Majoris का व्यास (diameter) ३ किलोमीटर होगा।

सौर ऊर्जा देश के दूरस्थ क्षेत्रों में विद्युत-प्रकाश की आशा किरण

✍ विष्णु कान्त

देश इस समय विकास के पथ पर बढ़ते हुए परिवर्तन, संक्रमण काल से गुजर रहा है, विकासशील से विकसित राष्ट्र के रूप में पहचान बना रहा है।

इस स्वप्न को पूरा करने के लिए ऊर्जा, विद्युत की अत्यंत आवश्यकता है। परन्तु यदि हम देश में ऊर्जा क्षेत्र की स्थिति को देखें तो विरोधाभासी परिदृश्य दिखाई दे रहा है। विद्युत जनरेशन (निर्माण) एवं आपूर्ति एक तरफ व निर्माण लागत व विद्युत दरें दूसरी तरफ स्थापित विद्युत परियोजनाएं अपनी पूरी क्षमता से निर्माण नहीं कर रही तो दूसरी तरफ नई परियोजनाएं बनाने पर जोर दिया जा रहा है, देश में पहाड़ी, दूरस्थ जनजाति क्षेत्रों के लाखों घर अभी भी अंधकार में हैं, वहाँ तक विद्युत लाइन डालना बहुत ही चुनौती भरा कार्य है। बड़ी विद्युत परियोजनाओं के पूरा होने में भी दसियों वर्ष लग जाते हैं। ऐसे में २०१८–१६ तक देश में सब को बिजली से जोड़ना एक दिवा स्वप्न है।

इस समय देश में स्थापित विद्युत क्षमता २७५ गीगावाट प्रतिवर्ष है कि जो अधिकतम आवश्यकता के समय की मांग १४० गीगावाट से लगभग दो गुनी है। विचित्र बात यह ह कि राज्य सरकारें पहले से लगी परियोजनाओं को पूरी क्षमता से

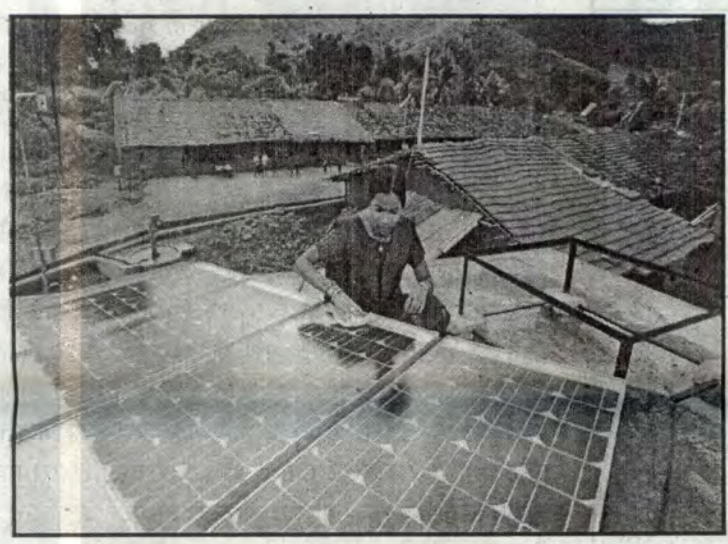

चलाने के स्थान पर नए–नए बिजलीघर बनाने की तरफ बढ़ रही हैं, यहाँ तक कि अनेक राज्य राष्ट्रीय विद्युत ग्रिड से अपने हिस्से की बिजली यह तर्क देकर समर्पित (लेने से इंकार) कर रहे हैं कि उनके यहाँ अतिरिक्त बिजली है, उनको आवश्कयता नहीं है। वे ही राज्य वे ही अधिकारी जो ऐसा कह रहे हैं वे यह तर्क देकर ई विशाल विद्युत परियोजनाओं हेतु MoU निजी क्षेत्र के साथ अनुबंध कर रहे हैं कि उनके यहाँ बिजली की कमी है। देखों www-vidyutpravah-in/ इस क्षेत्र में कुप्रबंध, अधिक निर्माण लागत और उससे भी अधिक नीति निर्धारकों प्रशासकों तथा निजी क्षेत्र व ठेकेदारों के निहित स्वार्थो–मिलीभगत के कारण यह दृश्य बना है।

यदि हमें सुदूर जनजाति क्षेत्रों, पहाड़ों में बसे गांवों का अंधकार दूर करना है तो हमें नवकरणीय (रिन्यूएबल) स्वच्छ ऊर्जा की ओर तेजी से बढ़ना होगा इसमें सौर, पवन, जैव ऊर्जा तथा लघु जल परियोजनाएं सम्मिलित है। सौर ऊर्जा तथा लघु जल परियोजनाए सम्मिलित है। सौर ऊर्जा में प्रारंभिक निवेश एक बड़ी चुनौती है परन्तु बाद में परिचालन लागत बहुत कम आती है, वर्तमान केंद्र सरकार ने स्वयं अपने हाथों से एक स्वर्णिम अवसर गवां दिया जब उसने २०१० से चलता आ रहा कोयले खनन व आयात पर लगा स्वच्छ ऊर्जा अधिभार (सेस) (जो शुरू में ५०रु टन था, जो बढ़ाते बढ़ाते २०१६–४०० रु कर दिया गया)। इस अधिभार से राष्ट्रीय स्वच्छ ऊर्जा एवं पर्यावरण कोष बनाया गया था जिसका सम्पूर्ण उपयोग स्वच्छ ऊर्जा के ऊपर अनुसन्धान पर किया जाना था। गत अप्रेल में सरकार ने इस कोष में जमा ५६,६०० करोड़ रु. और आगामी ५ वर्ष तक इसमें आने वाला अनुमानित १.०० लाख करोड़ रु. से भी अधिक राशि जी.एस.टी. की क्षतिपूर्ति के रूप में राज्य सरकारों को देना तय कर दिया। (५ वर्ष बाद इस मद में आने वाली राशी केंद्र व राज्यों में ५०–५० के अनुपात में बांटी जाएगी। सन्दर्भ (www.scrollin dated 24 July 2017) इसमें से २५ प्रतिशत राशि भी यदि स्वच्छ ऊर्जा के शौध एवं विस्तार हेतु रखी जाती तो भी इस कार्य को अपेक्षित गति मिलती, यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि सौर ऊर्जा के तकनीक व उपकरणों के क्षेत्र में चीन का ८३ प्रतिशत एकाधिकार है। अभी भी हमें स्वच्छ, सस्ती, टिकाऊ व कुछ ही महीनों में जिसका दूरस्थ क्षेत्रों में विस्तार किया जा सकता है ऐसी शौर ऊर्जा पर विशेष ध्यान देना होगा। समाज के नेतृत्व विशेषकर युवकों, एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं को अपने क्षेत्र में लगने वाली बड़ी जल विद्युत परियोजनाओं की ओर विशेश सावधान रहना चाहिए, बड़ी परियोजनाओं के स्थान पर लघु, सौर, पवन ऊर्जा आदि को प्राथमिकता देनी चाहिए। इससे विस्थापन के भीषण दुःख से भी समाज को बचाया जा सकेगा। इस विषय पर नीति आयोग ने भी एक अध्ययन करवाया था, उसका भी यही निष्कर्ष है। इस रिपोर्ट का सार भी यहाँ दिया जा रहा है।

हम कहेंगे कि मुस्लिम नही चाहिए तो हिंदुत्व भी नहीं बचेगाः भागवत

प्रतिक्रिया

१. राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, हिन्दुओं का सबसे बड़ा संगठन कहा जाता है किन्तु उसके सर संघ संचालक का उपरोक्त वक्तव्य हिन्दुओं को निराश करने वाला है।

२. उनका वक्तव्य गुरू गोलवलकर की सोच के अनुकूल है लेकिन उसके संस्थापक डा० हेड़गेवार ने संघ की स्थापना ऐसे स्वयं सेवक तैयार करने के लिए नहीं की थी।

३. १६४० में डा० हेड़गेवार के स्वर्गवासी हो जाने पर गुरू गोलवलकर द्वितीय सर संघ संचालक बने। उन्होंने अप्रत्यक्ष रूप से गांधी जी का समर्थन कराना शुरू कर दिया।

४. आपातकाल (१६७५–७७) के बाद संघ के राजनीतिक संगठन ने भी गांधीवादी विचारधारा अपना ली।

५. १६८० में भाजपा बनी तो कांग्रेस की कार्बन कापी की तरह काम कर रही है। मजबूरी में उसे ही हिन्दूवादी पार्टी माना जाता है।

६. अब भाजपा का प्रभाव कम होता देखकर स्वयं संघ के सर संघ संचालक गांधीवादी भाषा बोलने लगे हैं।

७. संघ के प्रवक्ता आरिम यासमीन बनाए गए हैं जो मुस्लिम हैं।

८. दूरदर्शन के विभिन्न चैनलों में वे ही संघ की ओर से बोलते हैं।

६. वीर सावरकर ने सही कहा था कि धर्म परिवर्तन से राष्ट्रीयता बदल जाती है वे यदि पुनः शुद्धि कराके घर वापसी कर लेते हैं तो ही राष्ट्रवादी हो सकते हैं।

१०. अतः हमारी राय है कि संघ परिवार शुद्धि/घर वापसी अभियान चलाकर उन विधर्मियों को आत्मसात करे तो संघ का समर्थन कर रहे हैं। ऐसा लगता है कि संघ ने भी मुस्लिमों के आगे घुटने टेकने शुरू कर दिए हैं।

मूलचन्द गोयनका, प्रचार मंत्री, सावरकरवाद प्रचार सभा, बुलन्दशहर

भारत के नागरिकों के मौलिक अधिकार

- भारतीय नागरिकों को निम्नलिखित मूल अधिकार प्राप्त हैं:
- समता या समानता का अधिकार (अनुच्छेद १४ से अनुच्छेद १८)
- स्वतंत्रता का अधिकार (अनुच्छेद १६ से २२)
- शोषण के विरुद्ध अधिकार (अनुच्छेद २५ से २४)
- धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार (अनुच्छेद २५ से २८)
- संस्कृति व शिक्षा सम्बन्धी अधिकार (अनुच्छेद २६ से ३०)
- संवैधानिक अधिकार (अनुच्छेद ३२)

समता या समानता का अधिकार

अनुच्छेद १४ : विधि के समघ समता इसका अर्थ यह है कि राज्य सभी व्यक्तियों के लिए एक समान कानून बनाएगा तथा उन पर एक समान ढंग से उन्हें लागू करेगा।

अनुच्छेद १५ : धर्म, नस्ल, जाति, लिंग या जन्म–स्थान के आधार पर भेद–भाव का निषेध–राज्य के द्वारा धर्म, मूलवंश, जाति, लिंग एवं जन्म–स्थान आदि के आधार पर नागरिकों के प्रति जीवन के किसी भी क्षेत्र में भेदभाव नहीं किया जाएगा।

अनुच्छेद १६ : लोक नियोजन के विषय में अवसर की समता–राज्य के अधीन किसी पद पर नियोजन या नियुक्ति से सम्बन्धित विषयों में सभी नागरिकों के लिए अवसर की समानता होगी। अपवाद–अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं पिछड़ा वर्ग।

अनुच्छेद १७ : अस्पृश्यता का अंत–अस्पृश्यता के उन्मूलन के लिए इसे दंडनीय अपराध घोषित किया गया है।

अनुच्छेद १८ : उपाधियों का अंत–सेना या विधा सम्बन्धी सम्मान के सिवाय अन्य कोई भी उपाधि राज्य द्वारा प्रदान नहीं की जाएगी। भारत का कोई नागरिक किसी अन्य देश से बिना राष्ट्रपति की आज्ञा के कोई उपाधि स्वीकार नहीं कर सकता है।

स्वतंत्रता का अधिकार

अनुच्छेद १६ : मूल संविधान में ७ तरह की स्वतंत्रता का उल्लेख था, अब सिर्फ ६ हैं शेष पृष्ठ 11 पर

ॐ कहो गर्व से, हम हिन्दू हैं ॐ

हिन्दू धर्म श्रेष्ठत्तम क्यों है?

हमारा धर्म हिन्दू सबसे प्राचीन धर्म है। हमारा धर्म श्रेष्ठतम् क्यों है इसके कुछ तथ्य हैं

1. हमारा धर्म ब्रम्हचर्य पर बल देता है जबकि अन्य किसी धर्म में ऐसा नहीं है।
2. भारत उत्थान का कार्य जितना हिन्दू धर्म में होता है उतना किसी अन्य में नहीं।
3. धर्म की रक्षा हेतु प्राणों की आहुति देने के जितने उदाहरण हिन्दू धर्म में देखने को मिलते हैं उतने अन्य किसी धर्म में नहीं उदाहरण पृथ्वीराज चौहान, छत्रपति शिवाजी, गुरू गोविन्द सिंह, रानी लक्ष्मीबाई आदि अनेकों उदाहरण हैं।
4. भाई–बहिन चाहे वो किसी भी रिश्ते के हों भाई–बहन ही रहते हैं।
5. दयावान होते हैं हिन्दू समाज के व्यक्ति। वह पशुओं पर भी दया को महत्व देता है।
6. जितने महापुरूष हिन्दू समाज में हुए जितने तपस्वी, ऋषि, महर्षि हुए सभी आध्यात्मिकता से जुड़े व अपने अनुभव का ज्ञान दिया।
7. हिन्दू धर्म राष्ट्र के प्रति कर्तव्यों का बोध कराता है।
8. अनेक उदाहरण हैं जो यह दर्शाते हैं कि वास्तविकता में हिन्दू धर्म श्रेष्ठतम् धर्म हैं हमें गर्व होना चाहिए कि हम हिन्दू हैं हमारा जन्म हिन्दू परिवार में हुआ है।

शेष पृष्ठ 1 का **पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव.......**

मतदान होगा। मतगणना ११ दिसम्बर को होगी और उसी दिन परिणाम घोषित कर दिये जाऐगें चुनावी घोषणा के साथ सभी राज्यों में आदर्श आचार संहिता लागू हो गई है। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने घोषणा किया है कि विध ानसभा चुनाव में अखिल भारत हिन्दू महासभा जनता की अपेक्षाओं पर खरा उतरेगी व चुनाव के पश्चात् एक मजबूत पार्टी के रूप में खड़ी होगी।

शेष पृष्ठ 1 का **रूस के साथ अहम समझौते का.......**

पतली है वहीं अमेरिका का भारत पर दबाव भी बेअसर साबित हुआ। इसके साथ ही अंतरिक्ष और उर्जा जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में भी कई समझौतों पर भी दोनों देशों के बीच हस्ताक्षर हुए। शिखर बैठक के बाद भारत सरकार ने कहा कि इस संबध से आतंकवाद के विरूद्ध संघर्ष, जलवायु परिवर्तन सहित कई क्षेत्रों में साझा बल मिलेगा। साथ ही अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों में हम अपने लाभदायक सहयोग को जारी रखने पर सहमत हुए हैं। भारत सरकार ने कहा कि मानव संसाधन विकास से लेकर प्राकृतिक संसाधनों तक, व्यापार से लेकर निवेश तक, नाभिकीय ऊर्जा से सौर ऊर्जा तक, समुद्र से लेकर अंतरिक्ष तक रूस और भारत के संबंधों का वृहद विस्तार होगा। गौर तलब है कि हर परिस्थितियों में रूस ने हमेशा भारत के साथ खड़ा रहा है। भारत और रूस के संबंध राजनीतिक व व्यापारिक संबंधों से कहीं बढ़कर है। रूस भारत द्विपक्षीय संबंधों में वार्षिक शिखर बैठक इस समय एक स्थापित परंपरा बन गई है। जिससे लक्ष्यों को पूरा करने के लिए किए गए प्रयासों पर समयवद्ध तरीके से चर्चा करने का मौका मिलता है और दीर्घकालीन लक्ष्यों को निर्धारित करने में आसानी हो जाती है। दोनों देशों की थल सेनाएं और नौ सेनाएं आज भी नियमित रूप से संयुक्त अभ्सास में हिस्सा लेतीं हैं। सैन्य और तकनीकि क्षेत्र में भारत–रूस के अब तक ७० अरब डॉलर से अधिक व्यापारिक समझौते हो चुके हैं। अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में भारत–रूस बराबर का सहयोगी है।

शेष पृष्ठ 6 का **भारतीय इतिहास के मिथ्याकरणपूर्वक........**

मुस्लिम इतिहासकारों को उद्धृत करने से नहीं चूकती है पर यदि कोई वृत्तांत इस बात का वर्णन करता है कि शिवलिंग के टुकड़ों को गजनी की मस्जिद की सीढ़ियों पर चुनवाया गया था, जिससे उन्हें निरंतर पददलित किया जा सके तो यह उनकी नजर में झूठ था। यदि प्रसिद्ध फारसी कवि शेख सादी अपने गुलिस्तान बोस्ता में कहता है कि उसने सोमनाथ के मन्दिर को देखा था तब रोमिला थापर उसे अविश्वसनीय कहती है। ये मंदिर को मस्जिद में बदले जाने की बात भी झूठ कहती है और सिर्फ उलुच खान के पहले आक्रमण के बाद उसे मस्जिद में बदले जाने की बात स्वीकार नहीं करती हैं। उलटा उनके अनुसार उस समय स्वयं क्षेत्रीय हिन्दू राजा आक्रमण के समय मन्दिर तोड़ते रहते थे। सोमनाथ में इस्लाम के आगमन के पूर्व की एक अरबी मूर्ति इज्जा की पूजा होती थी, जिसे महमूद तोड़ने के लिए आया था। अबुल फजल को उद्धृत करते हुए रोमिला थापर यह भी लिखती है कि १६वीं शताब्दी में अकबर के आदेश से सोमनाथ में व्यवस्थित रूप से शिवलिंग की पूजा की जाती थी। १७वीं शताब्दी के इतिहासकार फरिश्ता का वह विस्तृत विवरण, जिसमें उसने तत्कालीन गर्व से लिखा था कि महमूद गजनवी ने तलवार के एक ही वार से शिवलिंग के ऊपरी और मध्याााग को खण्डित कर दिया, रोमिला थापर अविश्वसनीय मानती है। ब्रिटिश लेखकों द्वारा रचित घटनाक्रमों में फरिश्ता के उद्धरणों को असत्य घोषित करती है। यदि उनकी बात को माना जाये, तो तुर्की हमलों में और विशेषकर गजनवी के आक्रमण में सोमनाथ में न तो शिवमूर्तियों या लिंग तोड़े गये और न ही दूसरे पवित्र स्थानों पर स्थित जैन मूर्तियों। रोमिला थापर तो एलेक्जेण्डार डाउ द्वारा १७६७–१७७२ में लिखी हिस्ट्री ऑफ हिन्दुस्तान में उद्धृत फरिश्ता के इतिहास को सत्य का साम्राज्यवादी संस्करण कहती थी। प्रसिद्ध इतिहासकार इलियट और डॉसन ने भी जहां लिखा है कि सुल्तान महमूद ने कहा था कि वह हिन्दू पर प्रतिवर्ष जिहाद या पवित्र युद्ध करेगा। यह रोमिला थापर को मान्य नहीं है। हिन्दू आहत मर्मस्थल की अवधारणा को एक साजिश द्वारा गढ़ी हुई दन्तकथा बताती हैं। उनके अनुसार सन् १८४२ में तत्कालीन गवर्नर जनरल वार्ड एलेनबरो द्वारा गजनी से लाये गये सोमनाथ मंदिर के दरवाजों का प्रदर्शन हिन्दुओं को फुसलाने व मुस्लिमों के विरूद्ध भड़काने का षडयंत्र था। ये विशाल लकड़ी के दरवाजे ब्रिटिश सेना के जनरल वॉट द्वारा अफगानिस्तान से लाये गये थे और एलनबरो की सार्वजनिक घोषणा के अनुसार हिन्दुओं के ८०० वर्ष पहले के अपमान के प्रतिकार के रूप में जनता के सामने प्रस्तुत किये गये थे। रोमिला थापर की एक ही टिप्पणी कि वे दरवाजे असली नहीं थे क्योंकि आक्रमणों के वृत्तान्तों में मंदिर के दरवाजों को सोमनाथ से गजनी ले जाने की बात नहीं आयी है इसलिए उनके अनुसार हिन्दुओं को बरगलाने के उद्देश्य से अंग्रेजों द्वारा यह नाटक रचा गया ाि। रोमिला थापर सिर्फ एक ही रट लगाये हुए हैं कि उस समय मंदिर ध्र्मान्धता के कारण आक्रान्ताओं ने नष्ट नहीं किया, उसका मूल कारण सिर्फ ध्न प्राप्ति करना था। उनके इतिहास का या विकृत विचारधाराओं का मात्र यही राजनीतिक मन्तव्य दशकों से रहा हैं ऐतिहासिक तथ्यों को राजनीतिक आवश्यकताओं के हिसाब से तोड़ने–मरोड़ने में वे सिद्धहस्त रही हैं।

रोमिला थापर जैसा कि ऊपर लिखा है, हिन्दू काल, मुस्लिम काल और ब्रिटिश काल जैसे कालनिर्धारण को साम्राज्यवादी नियति का त्रुटिपूर्ण युगविभाजन कहती हैं। वे यह भी कही है कि मध्यकाल में मुस्लिमों ने हिन्दुओं पर कोई अत्याचार नहीं यि। समग्र भारतीय मानस में वैज्ञानिक प्रवृत्ति का अभाव था। उन्होंने भवदगीता को हिंसा से जुड़ी एक बड़ी घटना काह। हर मोर्चे पर भारतीय इतिहास की मोर्चेबन्दी व मिथाकरण की उन्होंने एक दीर्घकालीन परम्परा डाली है। चाहे अयोध्या पर मार्क्सवादी हस्तक्षेप हो या अशोभनीय प्रत्युत्तर शैली हो या उनका अपने को साम्प्रदायिकता का स्वयम्भू विशेषज्ञ कहना हो, सच बात तो यह है कि वे और कुछ भी हों, सच बात तो यह है कि वे और कुछ भी हों, पर उन्हें इतिहासकाश्र नहीं कहा जा सकता हैं पहले वे खुद को गर्व से मार्क्सवादी कहती थीं, पर विश्वभर में साम्यवाद की अन्त्येष्टि होने के बाद से वे मात्र अपने आप को सेक्यूलर कहती है और कम से कम अपने लेखन के मामले में अपनी पहली पहचान छिपाना चाहती है।

शेष पृष्ठ 2 का **हिन्दू धर्म में कर्म का........**

करेंगे और जन्म–मरण के बंधन से मुक्त हो जाएंगे। मनुष्य को छोड़कर अन्य जीव–जंतु अपने कर्मो के फल भोगकर मनुष्य जीवन पाने के लिए आगे बढ़ रहे हैं। लेकिन हम मनुष्य बुरे कर्म करके अपने जन्म को खराब कर रहे हैं। स्वर्ग के निवासी भी अपने अच्छे कर्मो के फलों को प्राप्त कर रहे हैं। अच्छी आत्माएं और अच्छे कर्म करने वाले लोग परम आनंद (निर्वाण) प्राप्त करते हैं और स्वर्ग के लिए प्रस्थान करते हैं। सभी सजीव कर्म के सिद्धांत के अनुसार चलते है। कर्म का सिद्धांत इस बात पर आधारित है कि 'जैसा आप बोओंगे वैसा ही काटोगे' इसका मतलब है कि यदि आप दूसरों को खुशियां दोगे तो वे भी आपके चेहरे पर मुस्कान लाएंगे। ऐसा ही इसके विपरीत हैं यदि आप दूसरों के साथ गलत करोगे तो वे भी आपके साथ करेंगे। जीवन एक दर्पण है तो कि आपके कर्मों को दिखाता है। इसलिए दूसरों को मुस्कान दो जिससे आपके चेहरे पर भी मुस्कान आएगी।

हिन्दुत्व विज्ञान की आध्यात्मिक व्याख्या है

शेष पृष्ठ 9 का **भारत के नागरिकों के मौलिक...**

१६ (a) बोलने की स्वतंत्रता। १६ (b) शांतिपूर्वक बिना हथियारों के एकत्रित होने और सभा करने की स्वतंत्रता। १६ (c) संघ बनाने की स्वतंत्रता। १६ (d) देश के किसी भी क्षेत्र में आवागमन की स्वतंत्रता। १६ (e) देश के किसी भी क्षेत्र में निवास करने और बसने की स्वतंत्रता। (अपवाद जम्मू–कश्मीर) १६ (f) संपत्ति का अधिकार। १६ (g) कोई भी व्यापार एवं जीविका चलाने की स्वतंत्रता। **नोट :** प्रेस की स्वतंत्रता का वर्णन अनुच्छेद १६ (a) में ही है।

अनुच्छेद २० : अपराधों के लिए दोष–सिद्धि के सम्बन्ध में संरक्षण–इसके तहत तीन प्रकार की स्वतंत्रता का वर्णन है:

(a) किसी भी व्यक्ति को एक अपराध के लिए सिर्फ एक बार सजा मिलेगी।

(b) अपराध करने के समय जो कानून है उसी के तहत सजा मिलेगी न कि पहले और बाद में बनने वाले कानून के तहत।

(c) किसी भी व्यक्ति को स्वयं के विरुद्ध न्यायालय में गवाही देने के लिये बाध्य नहीं किया जाएगा।

अनुच्छेद २१ : प्राण एवं दैहिक स्वतंत्रता का संरक्षण, किसी भी व्यक्ति को विधि द्वारा स्थापित प्रकिया के अतिरिक्त उसके जीवन और वैयक्ति स्वतंत्रता के अधिकार से वंचित नहीं किया जा सकता है।

अनुच्छेद २१ (क) : राज्य ५ से १४ वर्ष के आयु के समस्त बच्चों को ऐसे ढंग से जैसा कि राज्य, विधि द्वारा अवधारित करें, निःशुल्क तथा अनिवार्य शिक्षा उपलब्ध कराएगा। (८६ वां संशोधन २००२ के द्वारा)

अनुच्छेद २२ : कुछ दशाओं में गिरफ्तारी और निरोध में संरक्षण, अगर किसी भी व्यक्ति को मनमाने ढंग से हिरासत में ले लिया गया हो, तो उसे तीन प्रकार की स्वतंत्रता प्रदान की गई है।

(१) हिरासत में लेने का कारण बताना होगा।

(२) २४ घंटे के अंदर (आने जाने के समय को छोड़कर) उसे दंडाधिकारी के समक्ष पेश किया जाएगा।

(३) उसे अपने पसंद के वकील से सलाह लेने का अधिकार होगा।

शेष पृष्ठ 7 का **केरल में बढ़ती हिंसा.......**

की जमीन खिसक रही है। सेवा और संस्कार के क्षेत्र में वे संघ के सामने नहीं टिकते। अतः उनके पास हिंसा ही एकमात्र रास्ता है; पर इतिहास गवाह है कि विचारों की लड़ाई विचारों से ही लड़ जाती है। वामपन्थ के दिन लद चुके हैं। बंगाली किला टूट गया है। अब केरल की बारी है। आज नहीं तो कल उन्हें यह बात माननी ही होगी।

-: तत्काल ग्राहक बनें :-

सदस्यता शुल्क

वार्षिक...150/- रुपये

द्विवार्षिक...300/- रुपये

आजीवन सदस्य...1500/- रुपये

ड्राफ्ट या मनीआर्डर

''हिन्दू सभा वार्ता'' के नाम भेजें।

पता :- हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001

नोट :- केवल स्थानीय चैक स्वीकार किये जाते हैं।

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

विशेषतायें जो अन्यत्र नहीं मिलतीं

1. पत्रकारिता के उच्च राष्ट्रनिष्ठ मानकों के लिए प्रतिबद्धता
2. राष्ट्र और हिन्दुत्व को हानि पहुँचाने वाले कारकों पर पैनी दृष्टि
3. साम्प्रदायिक और पृथकतावादी सोच पर जमकर प्रहार
4. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर पारदर्शी चर्चा
5. सामाजिक सरोकारों की तह तक जाकर समाधानपरक बहस
6. प्रेरक प्रसंग, महान् व्यक्तियों से प्रेरणा लेने का माध्यम
7. भ्रष्टाचार, अपराध और अंतर्राष्ट्रीय चिंतन पर तीखा आक्रमण

हमारा संकल्प

1. हम एक ऐसी समतामुलंक राष्ट्रीय व्यवस्था के पक्षधर हैं जहां निर्धनता का अभिशाप न हो, किसी का शोषण न हो, न्याय वनपशुओं की चेरी न बने, सब समान हों, एक दूसरे के सहयोगी हों।
2. हम एक ऐसी संस्कृतिक व्यवस्था के पक्षधर हैं जिसमें हिन्दुत्व के सार्वभौमिक और सार्वकालिक सिद्धांतों को प्रतिष्ठित किया जा सके, जिससे कि हिंसा, पाप, शोषण, विषमता और संवेदनहीनता की कालिमा से विश्व को मुक्ति मिले।

केवल इतना ही नही, अन्य भी बहुत सी जीवनोपयोगी सामग्री।
आपका साप्ताहिक, आपकी भावनाओं का दर्पण।

शेष पृष्ठ 5 का **घातक है : पर्यावरण..........**

किए जा रहे हैं। हम कभी साँस लेना नहीं भूलते, पर स्वच्छ वायु के संवाहक वृक्षों को जरूर भूल गए हैं। यही कारण है कि नित नई–नई बीमारियाँ जन्म ले रही हैं। इन बीमारियों पर हम लाखों खर्च कर डालते हैं, पर अपने पर्यावरण को स्वस्थ व स्वच्छ रखने के लिए पाई तक नहीं खर्च करते। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि वनस्पतियों का सिर्फ रंग ही हरा नहीं होता, उन्हीं से हमारा जीवन भी हरा–भरा है। हमारे जीवन–दर्शन में प्राचीनकाल से इनकी व्यापक उपस्थिति दर्ज है। अथर्ववेद औषधीय दृष्टि से जड़ी–बूटियों की महत्ता के बहाने वनस्पतियों की अनिवार्यता को स्थापित करता है। तमाम धार्मिक–संरक्षण की शिक्षा देते हैं और हमारे भीतर इसकी एक दृढ़ मनोभूमि भी रचते चलते हैं। भारतीय परंपरा में पेड़–पौधों को परमात्मा का प्रतीक मानकर उनकी पूजा का विधान बनाया गया है। वैदिक ऋचाओं में इनके महत्व को बताया गया है। शास्त्रों में पृथ्वी, आकाश, जल, वनस्पति एवं औषधि को शांत रखने को कहा गया है। इसका आशय यह है कि इन्हें प्रदूषण से बचाया जाए। यदि ये सब संरक्षित व सुरक्षित होंगे, तो निश्चित रूप से जीवन और जगत भी सुरक्षित व सुखी रह सकेगा। वृक्ष न सिर्फ धरती के आभूषण हैं, बल्कि मानवीय जीवन का आध ाार भी हैं। वृक्ष हमें प्रत्यक्ष रूप से फल–फूल, चारा, कोयला, दवा, तेल, इमारती लकड़ी के साथ जलाने की लकड़ी इत्यादि भी प्रदान करते हैं। वृक्ष से हमें वायु शुद्धीकरण, छाया, प्रोटीन, ऑक्सीजन के अलावा भी कुछ ऐसी चीजें मिलती हैं, जिन्हें प्राप्त करने के लिए हमें लाखों रुपये खर्च करने पड़ते हैं।

एक सर्वे के अनुसार एक वृक्ष अपने जीवनकाल में जितनी वायु को शुद्ध करता है, उतनी वायु को अप्राकृतिक रूप अर्थात मशीन से शुद्ध किया जाए तो लगभग ५ लाख रुपये खर्च करना पड़ेगा। इसी तरह वृक्ष छाया के रूप में ५० हजार, पशु–प्रोटीन चारा के रूप में २० हजार, ऑक्सीजन के रूप में २.५ लाख, जल सुरक्षा चक्र के रूप में ५ लाख एवं भूमि सुरक्षा के रूप में २.५ लाख के साथ हमारे स्वस्थ जीवन के लिए कुल १५ लाख ७० हजार रुपये का लाभ पहुँचाता है, पर आज का मानव इतना निष्ठुर हो चुका है कि वृक्षों के इतने उपयोगी होने के बाद भी, थोड़े से स्वार्थ व लालच में उन्हें बेरहमी से काट डालता है। जरूरत है कि लोग इस मामले पर गंभीरता से सोचें एवं संकल्प लें कि किसी भी शुभ अवसर पर वे वृक्षारोपण अवश्य करेंगे अन्यथा वृक्षों के साथ–साथ मानव–जीवन भी खतरे में पड़ जाएगा। भारत समेत पूरे विश्व को इस दिवस को एक पवित्र अभियान से जोड़ते हुए, न सिर्फ वृक्षारोपण की तरफ अग्रसर होना चाहिए, बल्कि ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन को कम करने की दिशा में भी प्रभावी कदम उठाने होंगे।

पर्यावरण का मतलब केवल पेड़–पौधे लगाना ही नहीं है, बल्कि भूमि प्रदूषण, वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण व ध्वनि प्रदूषण को भी रोकना है। हम प्राकृतिक संसाधनों का कम से कम दोहन करें। हर इंसान को धरती के प्रति अपनी जिम्मेदारी समझनी होगी, तभी पर्यावरण संतुलन की दिशा में कुछ ठोस किया जा सकता है। जिस प्रकार से हम औद्योगिक विकास और भौतिक समृद्धि की ओर बढ़ रहे हैं, वह पर्यावरण संतुलन के लिए खतरनाक है। पर्यावरण असंतुलन के कारण ही सुनामी और भयंकर आँधी–तूफान आते हैं। धरती का तापमान लगातार बढ़ रहा है, जिसके कारण पशु–पक्षियों की कई प्रजातियाँ लुप्त हो गई हैं। इनकी घटती संख्या पर्यावरण के लिए घातक है।

स्वच्छ पर्यावरण, जीवन का आधार है और इसके बिना जीवन का अस्तित्व ही खतरे में पड़ सकता है। पर्यावरण जीवन के प्रत्यक्ष पक्ष से जुड़ा हुआ है। पर्यावरण शुद्ध रहेगा, तो आचरण भी शुद्ध रहेगा। लोग नीरोगी होंगे और औसत आयु भी बढ़ेगी। दुर्भाग्यवश पृथ्वी, पर्यावरण, पेड़–पौधे हमारे लिए दिनचर्या नहीं, अपितु पाठ्यक्रमों का हिस्सा बनकर रह गए हैं। ऐसे में यदि मनुष्य ने अपनी दिनचर्या प्रकृति के अनुरूप नहीं बनाई और प्रदूषण इसी तरह बढ़ता रहा, तो तमाम सभ्यताओं का अस्तित्व खत्म होने में देर नहीं लगेगी।

शेष पृष्ठ 5 का **स्वयं के अन्दर के रावण......**

हो सकता पर इसी निन्दा के कारण आत्मा के किसी कोने में रावण रूपी विचारों का जन्म होता है, आलोचना व्यक्ति को अशिष्ट भी बनाती है इसलिए इसे मुँह से बोल कर नहीं, लिख कर देना उचित है।

मिलनसार बन तनाव भगाएं : आज की जीवन शैली में कुछ ऐसी स्थिति बनती जा रही है जहाँ व्यक्ति स्वयं में तल्लीन, परिस्थितिओं का गुलाम बनकर अपनों से दूर होता जा रहा है और एकाकी जीवन व्यतीत कर रहा है जिसके कारण जीवन की विषम परिस्थितियों में धैर्य खोकर तनाव भरा जीवन जी रहा है। अपने इस व्यवहार में परिवर्तन लाएं और मिलनसारता का गुण अपनाएं जिसमें तनाव के लिए स्थान न हो तबही व्यक्ति नम्र, मृदभाषी व व्यवहार कुशल बन सकता है और उसके इसी व्यवहार से सामने वाला या अन्य व्यक्ति चुंबक की भांति खिंचे चले आते हैं। इस सुन्दर जीवन को तनाव रहित बनाएं।

उपरोक्त कथन का सार ये ही है कि स्वयं के अन्दर छिपे रावण रूपी विचारों व बुराईयों को पहचान कर उनका त्याग करें व उनपर विजय पाएं तबही बुराई पर अच्छाई की जीत का पर्व मनाने की सार्थकता व क्षमता आयेगी।

विज्ञापन हेतु भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त डी.ए.वी. नं.-124778
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिन बुधवार - बृहस्पतिवार

डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2016-17-18
रजि सं. 29007/77

यह भी सच है

सिद्धांतहीनता की विडंबना

यह कैसी विडंबना है कि आज राजनैतिक विवशता इतनी अधिक सिद्धान्तहीन व आत्मघाती होती जा रही है कि हिंदुत्व की रक्षार्थ आक्रान्ताओं के वंशजों को जिहादी जनून से ग्रस्त होने पर भी स्वीकार किया जा रहा है? क्या मुसलमान के बिना हिंदुओं के अस्तित्व को असुरक्षित मानने का विचार स्वीकार करने के योग्य है? करोड़ों भारत भक्तों को देश के अनेक महापुरुषों के महान कार्यों व उद्देश्यों से प्रेरित होने के स्थान पर उनको भ्रमित करके उनमें ऐसे नकारात्मक भाव का बीजारोपण क्यों किया जा रहा है? क्या इस प्रकार अनेक लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं की विसंगतियों से हमारा समाज संस्कृति व धर्म की रक्षार्थ आक्रामक नेतृत्व के अभाव में निरंतर हतोत्साहित नही हो रहा है? जब राष्ट्रवादी समाज में इतनी सामर्थ्य हैं कि वह शौर्य, साहस व पराक्रम से परिपूर्ण होने पर भी हिंसक व वैमनस्यता बढ़ाने वाले धर्मांधों के प्रति सहिष्णु व उदार एवम अहिंसक बने रहकर अपनी आस्थाओं व आत्माभिमान से जीने के लिये जागरूक है तो ऐसी अवस्था में ऐसे विचारों का क्या औचित्य रह जाता है? हमारी सहस्रों वर्ष प्राचीन अश्वमेघ यज्ञ की संस्कृति को तो भुला ही दिया गया और अब अस्तित्व व अस्मिता की रक्षार्थ संघर्ष करके विजयी होने की प्रोत्साहित करने वाली मानसिकता को भी शिथिल करके मनोबल को तोड़ा जा रहा है। क्या यह सत्य नहीं कि अहिंसा, कायरता, सहनशीलता और भीरुता जो हमारे परतंत्रता काल की देन है, उससे हमारा आत्मविश्वास, आत्मसम्मान, आत्मबल के साथ साथ समाज, धर्म व राष्ट्र के प्रति प्रेम व भक्ति का भाव भी नष्ट हो रहा है? क्या इसी के दुष्परिणामस्वरूप हमें और हमारे नेतृत्व को अन्याय, अत्याचार, असत्य और अधर्म के सामने संघर्षरत होने के स्थान पर घुटने टेक आत्मसमर्पण करने को विवश होना पड़ रहा है? ऐसी स्थिति में भारत को भारत बने रहने के लिये और उसके धर्मनिर्पेक्ष स्वरूप को बनायें रखने के लिये राष्ट्रवाद कैसे सुरक्षित रह पायेगा? ऐसे में अगर भारत विरोधियों के षडयंत्र सफल हुए और देश के टुकड़े–टुकड़े चाहने वालों का मनोवल बढ़ा तो क्या देश को पुनः विभाजन या पराधीन होने से रोकना एक बड़ा चुनौतीपूर्ण संकट खड़ा नही हो जायेगा? इसलिये जब हमारी भूमि के संस्कार,संस्कृत व संस्कृति त्रिकालजयी तत्वों में भारतीय समाज सहित सम्पूर्ण मानवता का उत्थान करने की भरपूर क्षमता है तो फिर क्यों नहीं इसका व्यापक प्रसार व प्रचार करके ऐसे विस्फोटक संकट से सुरक्षित होते हुए विश्व को भी सार्थक संदेश देकर मानवता के उज्ज्वल भविष्य की कामना की जाय? इसके साथ ही यह भी उचित होगा कि नकारात्मक विचार व दर्शन वालों को भी आज के प्रगतिशील व परिवर्तनशाली वैज्ञानिक युग में अपने को ढाल कर "जियो और जीने दो" के सिद्धान्त को अपनाने का सकारात्मक परिचय देना होगा।

विनोद कुमार सर्वोदय

अहमदियों के लिए मुसीबत

सहाफत (४ मई) के अनुसार पाकिस्तान में अहमदियों की प्रतिनिधि संस्था जमात ए अहमदिया ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि वर्ष २०१७ में पाकिस्तान में सरकार और अतिवादी संगठनों ने अहमदियों को प्रताड़ित किया है। उनके नाम मतदाता सूचियों में दर्ज करने से इनकार कर दिया है ताकि वे उन्हें पाकिस्तान की राजनीति से दूर रख सकें। जमात ए अहमदिया के प्रवक्ता सलीमुद्दीन के मुताबिक पाकिस्तान सरकार की यह हरकत मानवाधिकारों हनन है। जानकारी के अनुसार पाकिस्तान सरकार १९७३ में बनाये गये एक कानून के तहत अहमदियों को गैर–मुसलमान घोषित कर चुकी है। सलीमुद्दीन ने कहा कि जब पाकिस्तान में मुसलमानों, हिन्दुओं, सिखों, ईसाइयों और पारसियों के नाम मतदाता सूची में शामिल किये जा सकते हैं, तो अहमदियों को क्यों निशाना बनाया जा रहा है? उन्होंने कहा कि मतदाता सूचियाँ एक जैसी होनी चाहिए। अगर ऐसा नहीं होता तो अहमदी चुनाव में भाग नहीं लेंगे। मजलिस–ए–अहरार उल इस्लाम के महामंत्री अब्दुल लतीफ खालिद चीमा का कहना है कि १९७३, १९७४ और १९८४ के अध्यादेश के अनुसार अहमदियों को गैर–मुस्लिम घोषित किया जा चुका है। वो पाकिस्तान के अल्पसंख्यक हैं और अहमदियों ने जो आरोप लगाये हैं, वो निराधार हैं उन्होंने कहा कि पाकिस्तान में अहमदियों के जो समाचार प्रकाशित किये जा रहे हैं, उसमें पाकिस्तान और मुसलमानों के खिलाफ निराधार प्रचार किया जा रहा है। इसके विपरीत जमात ए अहमदिया के प्रवक्ता सलीमुद्दीन का कहना है कि मुसलमान सरकार के इशारे पर अहमदियों के खिलाफ पाकिस्तान में दुष्प्रचार का अभियान चला रहे हैं। सरकारी दबाव के तहत समाचारपत्र अहमदियों द्वारा जारी किये गये खंडन को भी प्रकाशित नहीं कर रहे हैं। उन्होंने दावा किया कि पाकिस्तानी पंजाब की सरकार ने अहमदियों के समाचारपत्रों के प्रकाशन पर गत ३ वर्ष से प्रतिबन्ध लगा रखा है। उन्होंने दावा किया कि १९८४ के अहमदी विरोधी क़ानून के लागू होने के बाद से पिछले वर्ष के अन्त में २६४ अहमदियों को अतिवादी मुसलमानों ने इसलिए कत्ल कर दिया; क्योंकि उन्हें मुसलमान मानने के लिए तैयार नहीं थे। इसी दौरान अहमदियों पर ३७६ हमले किये गये और उनके २७ उपासना स्थलों को तबाह कर दिया गया और ३३ को जबरन बन्द कर दिया गया। अतिवादी मुस्लिम तत्त्वों ने ४० अहमदियों की कब्रों को ध्वस्त कर दिया और जबकि ६६ अहमदियों को मुसलमानों के कब्रिस्तान में दफन करने की अनुमति नहीं दी गई। उन्होंने आरोप लगाया कि अतिवादी इस्लामी संगठन जान–बूझकर अहमदियों को प्रताड़ित कर रहे हैं।

कबिरा खड़ा बजार में

काम चलाऊ "हिन्दू" होने की राजनैतिक विद्या

सियासत के गलियारे में सब कुछ सम्भव हैं, हालांकि पहले यह कार्य चलचित्र अथवा नाटकमंचों, पर ही किसी फिल्मकार, साहित्यकार, कथाकार की कपोल कल्पनाओं के साथ उकेरा जाता रहा था, लेकिन वर्तमान परिवेश में राजनीतिक कलाकारों द्वारा हिन्दू होने का अभिनय एक पूर्व रचित पटकथा पर बड़े ही उत्साह के साथ किया जा रहा है। देश की जनता भी बड़े ही सरल अंदाज में दर्शक बनकर इसका आनंद ले रही है। कुछ दिनों पहले दूरदर्शन पर एक साबुन का प्रचार हुआ आता था कि "तेरी कमीज से अधिक सफेद मेरी कमीज"। कमोवेश इस अंदाज में राजनीतिक दलों में यह बताने की होड़ मची है कि मेरा हिन्दू तेरे हिन्दू से बेहतर है। मेरा राष्ट्रवाद तेरे राष्ट्रवाद से अच्छा हैं, मेरा हिन्दुत्व तुम्हारे हिन्दुत्व से कहीं अधिक पारंपरिक है। इस लड़ाई की खास बात यह है कि खुद को बेहतर बताने के लिए धर्म की सारी मर्यादाओं को मीलों पीछे छोड़ते हुए अपनी सुविधाओं के अनुसार जातिगत आधार पर देवताओं का भी विभाजन करने में कोई कोताही नहीं बरती है। मुस्लिम तुष्टिकरण के लिए जानी वाली एक पार्टी के नेता स्वयं को डंका बजा–बजा कर हिन्दू तो बता ही रहें है, साथ–ही साथ खुद के जनेऊ धारी ब्राह्मण होने का खुलासा भी कर बैठे। अब लोगों को इस बात पर संदेह होने लगा कि हिन्दू धर्म में जातियां पिता और दादा की जाति के आधार पर निर्धारित की जाती है, क्योंकि ऐसा वेद–पुराणों में बताया गया है। हिन्दू धर्म की मान्यताओं के अनुसार जाति का आधार पितृ पक्ष होता है। लेकिन हिन्दू धर्म की मान्यताओं को परे रखकर कोई हिन्दू कैसे हो सकता है? जब कि उन तमाम मान्यताओं को पिरोकर शास्त्रों में भरने वाले ब्राह्मणों का समूचा कुल इस धर्म की पताका को आज तक फहराए हुए है। खैर! यह बेचारे भी दिल से कहां धर्म को मानने वाले है, यह तो वोटों के बाजार में अपने खानदानी प्रोडक्ट बेचने का हथकंडा अपनाने में प्रयासरत हैं। इनका हिन्दू होना चुनावों के दौरान मौसमी बुखार जैसा होता है; जो चुनाव के दौरान इलाज के लिए मंदिर–मंदिर दौड़ते हैं और चुनाव बाद जब बुखार उतर जाता है तो रोजा इफ्तार की शोभा बढ़ाने में जुट जाते है। अब बात चुनाव की चली है तो वर्तमान सरकारी पार्टी भी बड़े ही सलीके से हिन्दुत्व का अभिनय कर रही है। मर्यादा पुरुषोत्तम के नाम पर हिन्दुओं का भावुक मनोरंजन करके सरकारी आवासों में तो पहुंच गये, लेकिन भगवान राम के जन्मस्थान पर उनके स्थाई आवास की व्यवस्था आज तक नहीं कर पाए। इनके अध्यादेशों की पोटली में 'राम' के नाम का कोई कागज आज तक नहीं निकल पाया। लेकिन इस पार्टी ने वह कर दिखाया, जो वाकई कोई नहीं कर पाया, मतलब इनके हिन्दू होने के नाटक की अपार सफलता ने हिन्दुओं को दरकिनार करने वाले नेताओं को झूठा ही सही लेकिन स्वयं को हिन्दू बताने पर मजबूर होना पड़ा। जाति व एक धर्म विशेष की राजनीती करने वाले उत्तर प्रदेश के एक नेता को तो अचानक अहसास हुआ कि वह भी हिन्दू हैं, और जैसे ही यह बात उनके दिमाग में आई वैसे ही एक पत्रकार वार्ता बुलाकर उन्होंने इसका सार्वजनिक तौर पर एलान भी किया कि वह हिन्दू है, और इसको साबित करने के लिए वह अपने पैतृक गांव में एक विशाल मूर्ति भगवान कृष्ण की बनवाएंगे। राजनीति के इन नकली हिन्दुओं के बीच असली हिन्दू अपने अस्तित्व को ढूंढ रहा है, और नेताओं के इस अभिनय में अपनी संस्कृति, परम्परा और वास्तविकता की तलाश में जुटा है।

वीरेश त्यागी

E-mail : viresh.tyagi@akhilbharathindumahasabha.org

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2016-17-18
रजि सं. 29007/77
साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता
दिनांक 17 अक्टूबर से 23 अक्टूबर 2018 तक

प्राप्तेषु

स्वत्वाधिकारी अखिल भारत हिन्दू महासभा के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक मुन्ना कुमार शर्मा द्वारा स्कैन 'एन' प्रि., 115, कीर्ति नगर इन्डस्ट्रीयल एरिया, दिल्ली मुद्रित तथा हिन्दू महासभा भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। दूरभाष 011-23365138, 011-23365354
E-mail : akhilbharat_hindumahasabha@yahoo.com, editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org
सम्पादक : मुन्ना कुमार शर्मा, प्रबंध सम्पादक : वीरेश कुमार त्यागी

इस पत्र में प्रकाशित लेख व समाचारों की सहभागिता, संपादक-प्रकाशक की नहीं है। सम्पूर्ण विवादों का न्यायिक क्षेत्र नई दिल्ली है।